वैद्यरत्नम पी. एस. वारियर की

आर्यवैद्यशाला कोट्टक्कल

स्थापित : 1902

औषध सूची

1993



(केवल वैद्यों और चिकित्सा संस्थाओं के उपयोगार्थ)

हमारे प्रकाशन

वैद्यरत्नम पी. एस. वारियर की महत्वपूर्ण रचनाएँ

"चिकित्सा संग्रह"

इस में आर्यवैद्यशाला में तैयार किये औषधों के गुणविज्ञान फलश्रुति, मात्रा आदि का विवरण, सर्वसाधारण रोगों की आयुर्वेद विधि के अनुसार चिकित्सा का वर्णन, तथा पथ्याचरण के नियमों का सरल सुबोध भाषा में प्रतिपादन किया गया है।

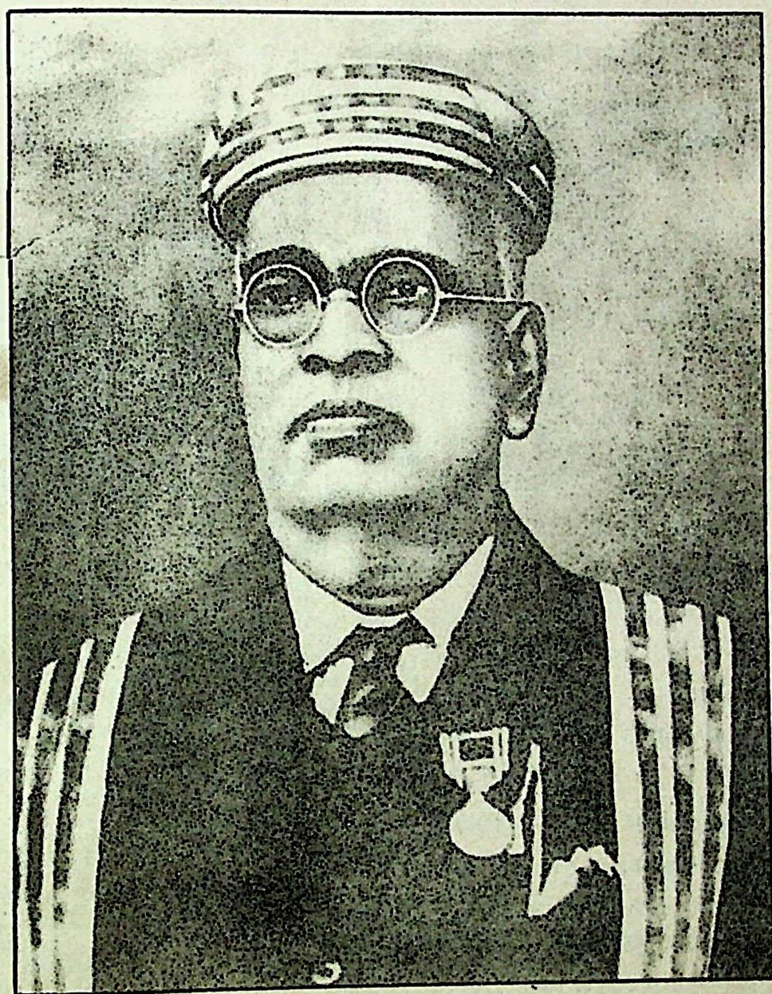
मलयालम रु. 30/- · हिन्दी रु. 25/-

"अष्टांग शारीर"

(संस्कृत)

रु. 12/-

सरल संस्कृत में लिखा हुआ यह विशिष्ट ग्रन्थ आर्यवैद्य समाज तथा दूसरी वैद्य संस्थाओं द्वारा पठित ग्रन्थ के रूप में अंगीकृत शरीर शास्त्र है। इस में 3000 से अधिक संस्कृत श्लोक हैं जिन की गूढ़ार्थबोधिनी नामक व्याख्या तथा 300 से अधिक अवयव चित्र भी हैं। इसके अध्ययन से आयुर्वेदप्रोक्त शारीर शास्त्र, पाश्चात्य वैद्यशास्त्र के अनुसार अंगविभाग (Anatomy) तथा अंग कर्म विभाग (Physiology) यथोचित समझ सकते हैं। इसलिए यह आयुर्वेद वैद्यों और अलोपतिक डाक्टरों के लिए समान आवश्यक तथा उपादेय है।



वैद्यरत्नम् पी. एस. वारियर

वैद्यरत्नं पी. एस. वारियर का

चिकित्सा संग्रह

(हिन्दी संस्करण)

हिन्दी रु. 25/-   मलयालम् रु. 30/-

आयुर्वेद शास्त्र का यह सरल सुन्दर संग्रह है। इसमें आर्यवैद्यशाला में तैयार किये सारे औषधों के गुणविज्ञान, फलश्रुति, मात्रा, उपयोग क्रम, पथ्याचार आदि का विवरण है।

सर्वसाधारण एक सौ से अधिक रोगों का, संप्राप्ति लक्षण के साथ वर्णन करके उनकी चिकित्सा का विधान किया है। इसमें पंचकर्म उपक्रम, धारा, तैलसेक, षष्टिकपिंड स्वेद आदि केरलीय विशेष क्रियाओं का विस्तार से वर्णन है। दिनचर्या, स्वस्थहित चिकित्सा का देशकाल आदि सारे ध्येय विषयों का भी इसमें प्रतिपादन है।

भाषा सरल है, प्रतिपादन हृद्य है, कठिन जटिल व गहन शास्त्र का यह सरल सहज व मधुर संक्षेप है। गहन गंभीर महा समुद्र मानो आप की चुल्लू में प्रस्तुत हो। स्वस्थों के लिए यह मार्गदर्शक है; वैद्यों के लिए यह सिद्धांत निर्देशक है।

शरीर जो धर्मार्थसाधन है उसका यह रक्षा-साधन होकर आप के साथ रहेगा।

आर्यवैद्यशाला

की

शाखाएँ

1.	**कोष़िकोड**	कल्लायी रोड	फोन	75666
2.	**कोष़िकोड**—सेयिल्स डपो: एस. एम. स्ट्रीट		फोन	63664
3.	**पालघाट**	वटक्कन्तरा	फोन	23104
4.	**पालघाट**—सेयिल्स डेपो: जी. बी. रोड		फोन	27084
5.	**तिरूर**	स्टेशन रोड	फोन	2231
6.	**एरनाकुलम्**	महात्मागान्धी रोड	फोन	352674
7.	**तिरुवनन्तपुरम्**	स्टाच्यू रोड	फोन	78439
8.	**आलुवा**—सेयिल्स डेपो		फोन	3549
9.	**मद्रास**	80-ए पूनमल्ली हाई रोड	फोन	6411226
10.	**कोयम्बतूर**	राजाजी रोड	फोन	32720
11.	**कण्णूर**	पिल्लयार कोविल रोड	फोन	64164
12.	**न्यू दिल्ली**-49 ई-76 सौत एक्स्टेनशन पार्ट 1		फोन	4621790
13	Calcutta - 4723118			4628006

हमारी सारी शाखाओं में मुफ़्त रोगियों की परीक्षा करके चिकित्सा का निर्णय कर देने के लिए अनुभवी व कुशल वैद्य रहते हैं।

22 Russa Road (E) ... Calcutta
Opp Bhawan cinema

प्रस्तावना

यह औषधसूची केवल वैद्यवृत्ति में लगे बंधुओं की आवश्यकता को सामने रख कर प्रकाशित की जाती है। हिन्दी में यह दूसरा संस्करण है। इस औषध सूची में हमारी संस्था के निर्मित सारे औषधों के गुण, फलश्रुति, उपयोगक्रम, मात्रा, पथ्याचरण आदि का विवरण दिया गया है।

वैद्य वन्धुओं को इस का खयाल रखना चाहिए कि आर्यवैद्यशाला के औषध, यद्यपि आयुर्वेद शास्त्र की विधि के अनुसार ही तैयार किये जाते हैं तो भी निर्माण में अपनी विशेष रीति काम में लायी जाती है। हमारे स्थापक गुरु **वैद्यरत्नम् पी. एस. वारियर** की अनुभवसिद्ध योजना ही इसका आधार है। उदाहरण के लिए 'कषाय सार' तैयार करके सुरक्षित रखने का प्रयास पहले पहल हमारी संस्था ने ही आरंभ किया था। निर्माण क्रम के अनुसार औषधों का उपयोग आदि में भी अवश्य भेद ज़रूरी होगा। भस्म, क्षार, रसायन आदि तीव्र शक्तिवाले औषधों की मात्रा में ज़रा भी अन्तर होने पर व्यापत् की संभावना है। इसलिए हमारी संस्था के औषधों का उपयोग करने वाले अथवा चिकित्सा में हमारे औषधों का नुस्खा देने वाले वैद्यों को हमारे औषधों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। आजकल देश के भिन्न-भिन्न स्थानों से हमारे औषधों की पूछताछ आती रहती है। बाहर के वैद्य लोग भी हमारे औषधों की सलाह देते हैं। ऐसी हालत में हमारी संस्था की शाखाओं और एजेंसियों के वैद्यों को तथा बाहर के वैद्यों को यह पुस्तक एक हैन्डबुक की तरह उपयोगी होगी ताकि उन्हें संन्देह पड़ने पर इस से ठीक दिशादर्शन होगा। औषध निर्णय और मात्रा आदि में कोई भूल चूक न होगी।

अब तक मलयालम, तमिल और अंग्रेज़ी में इसका प्रकाशन होता था जिन के अनेकों संस्करण हो चुके। इससे इसकी उपादेयता साबित हुई। इसमें यहाँ के **गोल्डन जूबिली नर्सिंग होम** के नियमों का तथा औषध मांगने के नियमों का ब्योरा भी दिया है। आशा है यह संस्करण हमारे हिन्दी भाषी वैद्य मित्रों को उपयोगी होगा।

कोट्टक्कल,
I—7—'82

पी. के. वारियर
मैनेजिंग ट्रस्टी, आर्यवैद्यशाला, कोट्टक्कल

गोल्डन जूबिली नर्सिंग होम

आर्यवैद्यशाला की सुवर्ण जयंती के उपलक्ष्य में जो 1954 में मनायी गयी थी इसका उद्‌घाटन हुआ था; जिसका विकास स्वरूप नया भवन 1978 में बना और उसका उद्‌घाटन भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देशाई के करकमलों से हुआ था। इसमें पिषि़च्चल (तैलसेक) धारा षष्टिकपिंड स्वेद आदि चिकित्साओं के लिए विशेष सुविधाओं के साथ, भवन समूह, द्विक (डबिल) तथा एकांत कमरे होते हैं जहाँ लोग परिवार समेत रह सकते हैं। (सारे कमरों में बिजली की रोशनी, नल का पानी, गुसलखाना नये ढंग के पाखाने और ज़रूरी फरनीचर होते हैं) रोगियों को पथ्याहार तैयार करने केलिए स्थायी इन्तज़ाम है। जो अपना भोजन आप पकाना चाहें (स्वयंपाक) उन के लिए अंगीठी और वर्तनभांडे का भी इन्तज़ाम कर देते हैं।

चिकित्सायें

पिषि़च्चल (तैलसेक), धारा, पष्टिकपिंड स्वेद आदि चिकित्साएँ एक निश्चित अवधि के साथ की जानेवाली हैं। रोग की दशा और स्वभाव के अनुसार उन की अवधि 14, 21, 90 दिनों की होती है। जितने दिनों तक चिकित्सा होती है उतने ही दिनों तक पूर्णविश्रान्ति और पथ्याचरण होना चाहिए जिसे मलयालम में **'नळ्ळिरिका'** कहते हैं। इस अवधि के बाद ही रोगी साधारण जीवनचर्या में प्रवेश कर सकता है। इसलिए जिन को 14 दिनों की चिकित्सा करानी है उन को 28 दिन की अवधि उस के लिए रख छोड़नी होगी।

जो रोगी नर्सिंग होम में रह कर चिकित्सा कराना चाहें उन्हें चाहिए कि वे पहले ही लिखा–पढ़ी करके अनुकूल जवाब पाने के बाद ही घर से रवाना करें। हो सकें तो सहायता के लिए एक ईमानदार व्यक्ति को भी साथ लाना अच्छा होगा। यहाँ की चिकित्साएँ प्रधान वैद्य की निगरानी में की जाती हैं।

कमरा रिसर्व करने के लिए प्रार्थनापत्र के साथ पांच रुपये का रजिस्ट्रेशन शुल्क भी अदा करना चाहिए। अगर किसी के नाम पर रिजरवेशन हुआ तो 100 रुपये पेशगी अदा करना चाहिए जो रकम चिकित्सा की रकम की बिलटी में से कम कर दी जायेगी।

कोट्टक्कल का निकटतम रेल्वे स्टेशन **तिरूर** है जो केरल स्टेट के पुराने मलबार जिला के कालिकट और षोरनूर के बीच में पड़ता है। तिरूर से कोट्टक्कल के लिए बसें सवेरे से रात तक चलती हैं। टैक्सियाँ हमेशा मिल सकती हैं। तिरूर स्टेशन के नज़दीक हमारी जो शाखा है वहाँ तलाश करने पर आवश्यक सहायतायें मिल जायेंगी।

औषध माँगने के नियम

1. दवाएँ नकद होकर ही वेची जायेंगी। दूर स्थित गाहकों को वी. पी. के जरिये भेजी जायेंगी। मालबन्दी वी. पी. की कमीशन आदि सारी खर्च गाहकों को वहन करनी होगी।

2. अजनबी गाहकों को चाहिए कि वे मांग करते समय कम से कम आधी रकम पेशगी भेज दें।

3. दूर स्थानों के लिए जब माल भेजते हैं तब हम मालबन्दी आदि में बड़ी सावधानी रखते हैं। लेकिन डाक या रेल में असावधानी से माल की कोई गड़बड़ी हुई तो उस के लिए हम जिम्मेवार नहीं हैं।

4. कच्चे मालों के दाम की कमीबेशी की घटती बढ़ती के अनुसार तैयार औषधों के दाम में भी थोड़ा परिवर्तन हो सकता है।

5. मांग करते समय आवश्यक औषधों की सूची साफ साफ लिखें और उसमें हस्ताक्षर डालकर भेजें। उसमें ठीक ठीक पता, निकट डाक घर, रेलवे स्टेशन आदि सारे ब्यौरे हों।

आर्यवैद्य चिकित्साशाला (अस्पताल)

1924 में इसकी स्थापना हुई थी। यहाँ बीमारों की रोगपरीक्षा करके चिकित्सा का निर्णय करने के लिए आयुर्वेद और अलोपती के कुशल वैद्य और डाक्टर नियुक्त हैं। सवेरे 8 बजे से 11 बजे तक तथा दोपहर के बाद 4 बजे से 6 बजे तक चिकित्साशाला खुली रहेगी। गरीब रोगियों को जाति धर्म आदि का खयाल किये विना मुफ्त दवायें दी जायेंगी। जो अत्यन्त गरीब और अनाथ हों उन्हें यहाँ मुफ्त प्रवेश देते हैं और सारा खर्च यहाँ से देते हुए अवस्थानुसार चिकित्सा की जाती है।

आयुर्वेद कालेज

यह केरल सरकार के द्वारा प्रस्वीकृत तथा कालिकट विश्वविद्यालय से संबद्ध है। आज उसका संचालन एक रजिस्टेर्ड सोसाइटी के जिम्मे है। यहाँ कालोचित रीति से आर्यवैद्य (B. A. M. S. Course) सिखाया जाता है। यहाँ पढ़ाई का माध्यम मलयालम है। इस संस्था में पाँच वर्षों की पढ़ायी है। पांचवें साल जो परीक्षा होती है उसमें उत्तीर्ण स्नातकों को बी. ए. एम. एस. की पदवी (डिग्री) दी जाती है।

कालेज में प्रवेश के लिए प्रार्थनापत्र नियत फार्म में भेजना चाहिए। प्री-डिग्री परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी ही इस के लिए प्रार्थना पत्र भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए "प्रिंसिपाल, आयुर्वेद कोलेज, कोट्टक्कल, मलप्पुरम जिला" इस पते पर लिखा-पढ़ी करें।

कोट्टक्कल,
1-7-'82

पी. के. वारियर
मैनेजिंग ट्रस्टी, आर्यवैद्यशाला, कोट्टक्कल

अरिष्ट और आसव

1 अभयारिष्ट

अर्शोरोग तथा कब्ज की शिकायत में प्रशस्त औषध है। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक। दोनों जून भोजन के पहले या बाद सेवन कर सकते हैं।

2 अमृतारिष्ट

जीर्णज्वर मलेरिया (अंतरा) विषम ज्वर अजीर्ण आदि रोगों में विषमज्वरान्तक, बृहज्ज्वरांकुश आदि उचित गुटिकाएँ मिलाकर सेवन करें। मात्रा—15 से 30 मि. लिटर तक।

3 अयस्कृति

प्रमेह और रक्ताल्पता में विशेष उपयोगी है। दोनों जून भोजन के पहले या बाद सेवन कर सकते हैं। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक।

4 अशोकारिष्ट

यह स्त्रियों के असृग्दर योनिस्राव आदि रोगों में प्रशस्त है। गर्भाशय संबन्धी रोगों में भी उपयोगी है। 15 से 25 मि. लिटर तक दोनों जून सेवन करना चाहिए। पथ्याचार—इमली मिर्च लहसुन आदि उष्णवीर्यवाली वस्तुओं का त्याग करें; मैथुन और शारीरिक श्रम भी वर्ज्य है।

5 अश्वगन्धारिष्ट

मानसिक रोगों में तथा शरीर का शोष और मन्दबुद्धिता में उत्तम औषध है। मात्रा—भोजन के पहले या बाद 15 से 25 मि. लिटर तक सेवन करें।

6 आरग्वधारिष्ट

यह त्वचा संबन्धी रोगों में मुख्य है। श्वित्र, कृमि, अर्शोरोग, दुष्टव्रण आदि में भी अच्छा है। शौच ठीक करता है। मात्रा—15 से 30 मि. लिटर तक सवेरे और शाम को सेवन करना चाहिए। पथ्याचरण तिक्तक कषाय के जैसे।

7 उशीरासव

रक्तपित्त तथा पाण्डुरोग के लिए विशेष औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

8 कनकासव

कासश्वास (दमा) तपेदिक इन में उपयोगी है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक भोजन के पहले, बाद या कई बार करके सेवन कर सकते हैं।

9 कुटजारिष्ट

यह रक्तातिसार और रक्त बहनेवाले अर्श में 15 से 25 मि. लिटर तक सुबह और शाम भोजन के पहले सेवन कर सकते हैं।

10 कुमार्यासव

पेट में घनता रक्ताल्पता हृद्रोग आदि में प्रत्यक्ष फलदायक है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक दोनों वक्त भोजन के बाद सेवन करें।

11 खदिरारिष्ट

कोढ़ श्वित्र इन में उत्तम है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

12 चन्दनासव

पूयस्राव (सोमरोग) तथा शुक्लस्राव में मुख्य औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक सवेरे–शाम को भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

13 चविकासव

मन्दाग्नि पांडु ग्रहणी इनमें बड़ा प्रभावकारी औषध है। मात्रा— 15 से 50 मि. लिटर तक है। रोज़ दोनों जून भोजनोपरांत सेवन करें।

14 चित्रकासव

श्वित्र और कोढ़ में उत्तम औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक। भोजन के पहले दोनों जून सेवन कर सकते हैं।

15 जीरकाद्यरिष्ट

यह दमा तपेदिक हिचकी इन में प्रशस्त औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक। भोजन के पहले या बाद अथवा कई बार करके सेवन कर सकते हैं।

16 दंत्यरिष्ट

कब्ज़ महोदर शोफ (सूजन) इन में विरेचन करके रोगशांति करेगा। गुल्म के लिए भी अच्छा है। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक सबेरे और शाम को सेवन कर सकते हैं।

17 दशमूलारिष्ट

बलक्षय, शुक्लक्षय, कृशता, वायुक्षोभ, बेहोशी, जीर्ण ज्वर इन रोगों में उत्तम दवा है। ओज और कांति को बढ़ाएगा। रोगशांति के बाद भी जो कमजोरी होती है उस के लिए विशेष औषध है। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक। दोनों वक्त भोजन के पहले या बाद सेवन कर सकते हैं।

18 दुरालभारिष्ट

अर्शोरोग कब्ज मन्दाग्नि इनमें उत्तम औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक। सवेरे-शाम भोजन के पहले सेवन कर सकते हैं।

19 द्राक्षारिष्ट

बलहानि, पाण्डुरोग, ग्रहणी इन में सेवन करने के लिए उत्तम दवा है। शरीर को हृष्ट-पुष्ट करेगा भी। मात्रा— 25 से 50 मि. लिटर तक दोनों वक्त भोजन के पहले या बाद सेवन करें।

20 धान्वन्तरारिष्ट

यह पक्षवात अर्दित बाह्यायाम अन्तरायाम आदि सब तरह के वात रोगों में प्रधान औषध है। प्रसूता नारियों के लिए इसका सेवन लाजिमी है। बुखार बदहज़मी, आन्त्रवायु गुल्म मूत्रकृच्छ्र योनिरोग क्षय आदि रोगों में भी यह खास दवा है। मात्रा— 15 से 30 मि. लिटर तक।

12 निंबामृतासव

त्वचा संबन्धी रोग, रक्तवात और व्रण में मुख्य औषध है। मात्रा—15 से 30 मि. लिटर तक।

22 पार्थाद्यरिष्ट

हृद्रोग और रक्तक्षय में लोहभस्म महाधान्वन्तर गुटिका आदि यथायुक्ति मिलाकर सेवन करना अच्छा है। मात्रा—15 से 50 मि. लिटर तक।

23 पिप्पल्यासव

ग्रहणी पांडु मन्दाग्नि आदि उपद्रवों में यह उत्तम औषध है। मात्रा— 15 से 30 मि. लिटर तक रोज दोनों वक्त भोजनोपरांत सेवन कर सकते हैं।

24 पुनर्नवासव

शोफ और पांडुरोग के लिए सिद्धौषध है। मात्रा— 25 से 30 मि. लिटर तक दोनों वक्त भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

25 पूतीकरंजासव

अर्शोरोग और मन्दाग्नि के लिए प्रशस्त औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक भोजन के पहले सेवन करें।

26 पूतिवल्कासव

अर्शोरोग और मन्दाग्नि की शिकायत में उत्तम दवा है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

27 बलारिष्ट

वातरोगों में प्रशस्त है। मात्रा— 15 से 30 मि. लिटर तक। रोज दो या तीन बार सेवन कर सकते हैं।

28 बालामृत

बच्चों की शरीर पुष्टि के लिए तथा रोग बाधा से रोकने के लिए यह फलप्रद है। मात्रा—5 से 25 मि. लिटर तक।

29 मधूकासव

ग्रहणी मन्दग्नि आदि उपद्रवों में 15 से 25 मि. लिटर तक दोनों जून भोजन के पहले या बाद को सेवन कर सकते हैं।

30 मुस्तारिष्ट

बच्चों की ग्रहणी मन्दाग्नि अतिसार रुचिहानि आदि उपद्रवों में सेवन के लिए मुख्य औषध है। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक।

31 मूलकाद्यरिष्ट

यह बच्चों के करप्पन, चिलन्नी (विसर्प के भेद), सूजन त्वग्दोष–रक्तदोष आदि में अच्छी दवा है। मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक प्रतिदिन दो या तीन दफ़े सेवन कर सकते हैं।

32 मृतसंजीवनी

कमजोरी, अलसाई मन्दग्नि इन में 15 से 25 मि. लिटर तक दोनों वक्त भोजन के पहले या बाद सेवन कर सकते हैं।

33 मृद्वीकारिष्ट

ग्रहणी, पाण्डु, बलहानि इन में इस का सेवन करना अच्छा है। मात्रा— 25 से 50 मि. लिटर तक भोजन के पहले या बाद सेवन करें।

34 रोहीतकारिष्ट

यह प्लीहारोग तथा महोदर में मुख्य औषध है। मात्रा— 15 से 30 मि. लिटर तक दोनों वक्त भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

35 लोध्रासव

प्रमेह रोगों में मुख्य औषध माना जाता है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक भोजन के पहले सेवन किया जाए।

36 लोहासव

रक्ताल्पता और पाण्डुरोग में बढ़िया औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक भोजन के बाद सेवन करना चाहिए।

37 वाशारिष्ट

दमा, तपेदिक, रक्तपित्त इन में अचूक दवा है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक भोजन के पहले या कई बार करके सेवन कर सकते हैं।

38 विदार्याद्यासव

पांडुरोग, यकृद्रोग, प्लीहारोग, परिणामशूला (पाचन के समय दर्द) मंदाग्नि, मूत्ररोग, ग्रहणी, अर्श आदि रोगों में इसका उपयोग कर सकते हैं। मात्रा—15 से 30 मि. लिटर तक।

39 विश्वामृत

यह ग्रहणी, अतिसार, मन्दाग्नि, अरुचि आदि उपद्रवों में उत्तम औषध है। अजीर्ण तथा पेट दर्द के लिए अनुभवसिद्ध है। आम ज्वर में तथा सूतिकाओं के रोगों में भी इस का सेवन कर सकते हैं। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

40 शारिबाद्यासव

यह प्रमेह के पिटक, फिरंग आदि रोगों में उत्तम है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

41 श्रीखण्डासव

मदात्यय, मति–भ्रम, स्वप्नों में इन्द्रिय स्खलन इन में लाभकारी औषध है। मात्रा— 25 से 50 मि. लिटर तक। भोजन के पहले या कई बार करके सेवन करना चाहिए।

42 सारस्वतारिष्ट

मन्दबुद्धि, मानसिक रोग इन में अच्छा है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक सवेरे सेवन करना चाहिए। बच्चों के लिए 5 से 10 मि. लिटर तक।

तैल वर्ग *

1 अणुतैल

यह तैल ऊर्ध्वांग (गले के ऊपर) के सारे रोगों में नस्य कर्म के लिए प्रशस्त है। मात्रा— 2 से 10 बिन्दु तक।

2 अग्निव्रण तैल

आग से झुलसते ही इस तैल को लगाने पर फफोले नहीं निकलेंगे। फफोलों के निकलने के बाद यह तैल लगाये तो व्रण पकते नहीं हैं। साधारण व्रणों में भी इस का उपयोग हो सकता है।

3 अमृतादि तैल (चेरियतु)

गठिया, सिर का दाह, दर्द इन में यह तैल सिर पर लगाने के लिए अच्छा है। तुरन्त शान्ति मिलेगी।

4 अमृतादि तैल (वलियतु)

जुकाम, फोड़े, फुंसियाँ, त्वग्दोष इनकी शिकायत में नहाने के एक घंटा पहले सिर पर लगाएं तो उपद्रव की शान्ति होगी।

5 अरिमेदस्तैल (चेरियतु)

मुख रोग तथा दांत के रोगों में इस से थोड़ी गरमी के साथ कुल्ला करें तो जल्दी चंगा होगा। सिर पर भी लगा सकते हैं।

6 अरिमेदस्तैल (वलियतु)

मुख तथा दांत के रोगों में कुल्ला करने के लिए बढ़िया औषध है। थोडा गरम करके उपयोग करें।

7 अश्वगन्धादि तैल

जिन का जननेन्द्रिय बिल्कुल छोटा हो, वे इस तैल को लगा कर रोज एक घंटे तक हाथ फेरते रहें। जननेन्द्रिय बडा होगा, साथ ही शुक्लपुष्टि भी होगी।

* मलयालम में तेल को एण्णा कहते हैं।

8 असनविल्वादि

यह आँख, कान और सिर के रोगों में सिर पर लगाने के लिए बढ़िया है। जुकाम को भी रोक लेगा।

9 असनमंजिष्ठादि

यद तैल सिर और आँखों को शीतलता देता है तथा सुख पहुँचाता है।

10 असनएलादि

गुण असन विल्वादि के समान है। लेकिन जुकाम में विशेष फल देता है।

11 आदित्यपाक तैल

खुजली, फोड़े फुंसी, कोढ़ इन रोगों में बदन पर मलकर हाथ फेर लें। दो घंटे बाद गरम पानी से नहायें। ऊपद्रव की शान्ति होगी।

12 आरनालादि तैल

गठिया, उसके उपद्रव रूप में होनेवाले बुखार, दाह, उमस, दर्द इन में वाहर मलने के लिए अच्छा है।

13 आरुकालादि तेल

कामिला और पाण्डु रोग में, नहाने के आधा घंटा पहले सिर पर तथा बदन पर लगा सकते हैं।

14 एलादि तेल

जुकाम, फोड़ा, फुंसी इन में नहाने के एक घंटा पहले सिर और बदन पर लगाना अच्छा है।

15 एलादि नारियल का तेल

यह छोटे बच्चों के फोडा, फुंसी त्वग्दोष--रक्तदोष तथा करप्पन (विसर्प) में एलादि तेल से बढ़कर उपयोगी है।

16 कच्चोरादि तेल

कोढ़, खुजली, फोड़ा, फुंसी त्वदोष इन में बदन पर मलने के लिए विशेष औषध है।

17 कर्णशूलान्तक तैल

कानों की सख्त बीमारियों में कान में भरने से आशु फल मिलेग्रा।

18 कदली फलादि तैल

यह तैल लगातार होनेवाले सिरदर्द में रोज सिर पर लगाकर नहाये तो जल्दी रोग शान्ति होगी।

19 कय्यन्त्यादि तेल

यह तेल आँख, कान और सिर के रोगों में स्नान के एक घंटा पहले सिर पर लगा कर नहाया करें। शीघ्र ही सुख मिलेगा।

20 कर्पूरादि तैल

वात, तोद तथा स्तम्भ (सुन्न होना), में यह तैल मलकर हाथ फेरने के बाद स्वेद करना चाहिये। जल्दी सुख होगा।

21 कार्पासास्थ्यादि तैल

वात रोगों में, विशेष कर अर्दित में, सिर और बदन पर लगाने के लिए विशिष्ट तैल है।

22 कार्पासास्थ्यादि कुषम्पू (त्रिवृत)

अर्दित, तोद तथा स्तंभ में केवल बदन पर लगाने ले लिये अच्छा है।

23 किंशुकपत्रादि तैल

पुरानी खुजली, फोडा, फुंसी, कमर की पिटका इन में यह तैल मलकर दोनों वक्त गरम पानी से धो लें। बिना देरी के उपद्रव शान्त होगा।

24 कुंकुमादि तैल

यह मुँह की फुंसी, व्यंग (काली निशान) आदि में मुँह पर लगाने तथा नस्य करने के लिए बढ़िया है।

25 कुंतल कान्ति तैल

सिर के बालों के बढ़ाने, फकने से रोकने तथा सिर की खुजली को दूर करने लिए रोज़ सिर पर लगाने के लिए उत्तम है।

26 कोट्टमचुक्कादि

वातोपद्रव में बदन पर लगाने के लिए अच्छा है। सन्धियों के दर्द तथा सूजन के लिए खास दवा है।

27 क्षार तैल

यह कानों में पाक, खुजली, पीव का बहना, बदबू, दर्द आदि उपद्रवों में गरम करके कानों में भरना चाहिए।

28 क्षीरबला तैल

सारे वातरोगों में बदन पर लगाने, सेवन करने तथा वस्ति आदि के लिए उपयोग कर सकते हैं। मात्रा—15 से 50 मि. लिटर तक। 3, 7,

14, 21, 41, 101 दफे आवर्तित तैल सेवन तथा नस्य के लिए विशेष उपयोगी है। मात्रा—5 से 15 मि. लिटर तक। 101 आवृत्ति को छोडकर दूसरी सारी आवृत्तियाँ कषायों में प्रक्षेपक मिलाने के समय मात्रा 15 से 20 बूंद तक है। 101 आवृत्ति कषायों में मिलाने के लिए 10 से 60 बूंद तक तथा नस्य के लिए 6 से 10 बूंद तक उपयोग कर सकते हैं।

29 क्षीरबला तैल (3 आवर्त्तित)

30 क्षीरबला तैल (7 आवर्त्तित)

31 क्षीरबला तैल (14 आवर्त्तित)

32 क्षीरबला तैल (21 आवर्त्तित)

33 क्षीरबला तैल (41 आवर्तित)

34 क्षीरबला तैल (101 आवर्तित)

35 गन्ध तैल

गिरने या मार पड़ने से हड्डी टूट जाने या मसल जाने पर यह सिद्ध औषध है। बदन पर मल सकते हैं। सेवन भी कर सकते हैं। दूसरे वातिक तथा पैत्तिक रोगों में भी इस का उपयोग कर सकते हैं। मात्रा 5 से 10 मि.लिटर तक।

36 गन्धक तैल (सेवन करने के लिए)

कोढ़, खुजली, फोडा, फुंसी इनमें इस का सेवन कर सकते हैं। मात्रा—20 से 50 बूँद तक दोनों वक्त भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

37 गन्धक तैल (बाहर मलने के लिए)

कोढ़, खुजली, फुंसी इन में बदन पर मलकर दो घंटे बाद गरम पानी से धोना चाहिए।

38 गन्धर्वहस्तादि एरंडी का तेल

यह सुखविरेचन के लिए अच्छा है जिस से कोई व्यापद की शंका नहीं है। बदन पर दर्द, रीढ़ पर तोद आदि वातिक उपद्रवों में विरेचन करके जल्दी स्वास्थ्य पहुँचाता है।

39 चन्दनादि तैल (चेरियतु—छोटा)

सिर को तर करता है। सिर का दाह, बुद्धि का भ्रम तथा मदात्य में यह सिर पर लगाने के लिए अच्छा है।

40 चन्दनादि तैल (वलियतु–बडा)

गरमी की आधिकता, शरीर दाह, बुद्धिभ्रम इन में स्नान के एक घंटा पहले यह सिर पर लगाना चाहिए।

41 चिञ्चादि तैल (चेरियतु–छोटा)

यह सर्वांग वात के लिए अच्छा है।

42 चिञ्चादि तैल (वलियतु–बडा)

सब तरह के वातिक रोगों में बदन पर लगाने तथा नस्य के लिए उत्तम हैं।

43 चेम्परुत्यादि नारियल का तेल

बच्चों के करप्पन (विसर्प) आदि रोगों के आने से रोकने के लिए तथा जो आयें उन्हें चंगा करने के लिए सिर और बदन पर मलना चाहिए। ग्रहणी भूतबाधा आदि में भी अच्छा है। ठंड़े पानी में नहाना नहीं चाहिए।

44 जात्यादि तैल

व्रण किसी भी तरह का हो शुद्धि करके भरा देने के लिए यह अत्युत्तम औषध है। व्रण प्रदेश पर मल सकते है; धारा सकते हैं; कपड का टुकडा इस तैल में भिगों कर व्रण पर रख सकते हैं। व्रण का दोनों वक्त औषध–जल से धोना भी चाहिए।

45 जीवन्त्यादि तैल

यह वातिक तिमिर में नस्य के लिए प्रशस्त है। दर्शन तंत्री (Optic Nerve) तथा रश्मिधरा कला (Retina) की कमज़ोरी दूर करके दर्शन शक्ति बढ़ाएगी। ह्रस्वदृष्टि में भी इस का उपयोग कर सकते हैं।

46 जीवन्त्यादि यमक

हाथ, पैर और ओठ के फटने पर मलने के लिए अच्छी दवा है।

47 तुंगद्रुमादि

पित्ताधिक्य दाह और बुद्धि के भ्रम में स्नान के एक घंटा पहले इस को सिर पर लगाना चाहिए।

48 तुलस्यादि तैल

नाक से तथा मुँह से दुर्गन्धित पानी के बहने में सिर पर लगाने के लिए अच्छा है।

49 तेङ्ङिङ्न पुष्पादि तैल

आँखें लाल होना, पानी का बहना, आँखों में चर्वी जमना, सिर दर्द, पीनस आदि उपद्रवों में सिर पर लगाने के लिए यह उत्तम औषध है।

50 तेकराज तैल

कासश्वासों में खासकर प्रतमक श्वास में सिर पर लगाने के लिए प्रशस्त है।

51 तेकराज एरंड तैल

दीर्घकाल से उपद्रव करनेवाले कासश्वास में 5 से 15 मि. लिटर तक रात के भोजन के उपरांत सेवन कर सकते हैं। विरेचन होगा।

52 त्रिवृत स्नेह

वात रोगों में बदन पर मलने के लिए उत्तम है।

53 त्रिफलादि तेल

आँख और कान के रोगों में सिर पर लगाने के लिए उत्तम तेल है।

54 दिनेशवल्यादि कुषम्पु

चमड़े के रोग, खुजली, फोड़ा, फुंसी इन में यह कुषम्पु स्नान के एक घंटा पहले बदन पर मलना चाहिए।

55 दूर्वादि तैल

सिर के फोडे, फुंसी तथा तारन (खुजली) में यह सिर पर लगाने के लिए विशेष उपयोगी है।

56 धान्वन्तर तैल

वातिक रोगों में तत्संबन्धी दूसरे उपद्रवों में इस का अवर्णनीय प्रभाव है। गर्भिणी तथा सूतिकाओं के लिए यह विशेष उपयोगी है। सेवन करने तथा सिर पर और बदन पर लगाने के लिए इस का विशेष उपयोग है। मात्रा क्षीरबला के जैसे। आवर्तित तैल का सेवन अधिक फलदायी है।

57 धान्वन्तर तैल 3 आवृत्ति

58 „ 7 „

59 „ 14 „

60 „ 21 „

61 „ 41 „

62 „ 101 „

63 धान्वन्तरं कुषम्पु

सब तरह के वातरोगों में बदन पर मलने के लिए तथा परिषेक (पिषिच्चल) के लिये यह उत्तम है। स्नान गरम पानी से करना चाहिए।

64 धुर्धूरादि तैल

सिर के तारन (खुजली) मिटाने तथा बाल बढ़ाने के लिए अच्छा है।

65 धुर्धूरपत्रादि नारियल का तेल

बच्चों के विसर्प रोगों में सिर और बदन पर लगाने के लिए इस का विशेष उपयोग है।

66 नागरादि तैल

सारे ऊर्ध्वांग रोगों में विशेष कर मुख रोगों में यह मुख्य है। बदन पर मलने तथा नस्य के लिए भीं इस का उपयोग है।

67 नारायण तैल (चेरियतु–छोटा)

वात रोगों में तथा रक्तवात में नस्य के लिए तथा सेवन के लिए यह उत्तम है।

68 नारायण तैल (वलियतु–वडा)

वात और रक्तवात में नस्य, सेवन आदि के लिए सिर और बदन पर लगाने के लिए तथा वस्ति के लिए इस का विशेष उपयोग है।

मात्रा क्षीरवला के जैसे।

69 नाल्पामरादि तैल

खुजली, फोडे, फुंसी और विसर्प में सिर और वदन पर लगाने के लिए अच्छा हैं। रक्तदोष को दूर करता है।

70 नाल्पामरादि नारियल का तेल

उपरोक्त रोगों में बच्चों के लिए यह विशेष उपयोगी है।

71 नासार्शस्तैल

गले में सूजन, (Tonsilitis) नाक में मांस का बढना आदि उपद्रवों में सिर पर लगाने के लिए यह उत्तम है।

72 निंवादि तैल

सिर पर तारन (खुजली), फोडा, फुंसी, बाल झड़ना इन में स्नान के एक घंटा पहले यह सिर पर लगाना चाहिए।

73 निंबामृतादि तैल

लगातार होनेवाले जुकाम में सिर पर लगाने के लिए यह उत्तम है।

74 निंबामृतादि एरंडी का तेल

गठिया संबन्धी उपद्रवों में सिर पर लगाने के लिए, त्वचा संबन्धी रोगों में, शौच ठीक करने में तथा जुलाब लेने के लिए इसका सेवन कर सकते हैं।

मात्रा— 2 से 15 मि. लिटर तक।

75 निशोशीरादि तैल

प्रमेह रोगियों को फोडा निकलने से रोकने के लिए रोज़ इसे सिर और बदन पर लगाना चाहिए।

76 नीलीभृंगादि तैल

बाल लम्बा बढ़ाने के लिए तथा सिर और आँखों को सुख देने के लिए यह प्रशस्त तैल है।

77 नीलीभृंगादि नारियल का तेल

इसके गुण नीलीभृंगादि तेल के बराबर है। लेकिन बच्चों के लिए विशेष उपयोगी है।

78 नीलीदलादि नारियल का तेल

मकडी के विष में ऊपर मलने के लिए उत्तम है।

79 नोड्ङणादि तैल

श्लीपद में सेवन के लिए अच्छा है। 5 से 25 मि. लिटर तक सवेरे या रात के भोजन के बाद रोज सेवन करना चाहिए। शौच ठीक होगा। बदन पर मल भी सकते हैं।

80 पंचवल्कादि तेल

रक्तपित्ताधिक विसर्प, कोढ, खुजली, फोडा, फुंसी इनमें सिर और बदन पर लगाने के लिए उत्तम है।

81 पंचाम्ल तैल

सूजन (शोफ) पाण्डु और उदर में बदन पर मलने के लिए उत्तम है।

82 पप्फणादि तैल

यह वृद्धिरोग में सेवन के लिए और सूजन के स्थान पर मलने के लिए अच्छा है। विरेचन होगा।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक।

83 परिणतकेर्यादि तैल

यह अपबाहु (जहाँ कंधढ़का स्तंभ और दर्द हो) में मलने के लिए उत्तम है।

84 पामान्तक तैल

पांमा, विसर्प, बच्चों की खाज, खुजली आदि रोगों में सिर और बदन पर लगाने के लिए विशेष उपयोगी है।

85 पारन्त्यादि तैल

यह सांप और मण्डली की विषबाधा से उत्पन्न जीर्ण व्रणों की शुद्धि करके भरा देने में उत्तम तैल है।

86 पालण्ड्वैरण्ड तैल

अर्शोरोग तथा उदावर्त में विरेचन के लिए उत्तम है।

मात्रा— 15 से 50 मि. लिटर तक।

87 पिण्ड तैल

गठिया में बदन पर लगाने तथा सूजन के स्थान पर मलने के लिए विशेष औषध है।

88 पिण्ड तैल खजित

उपरोक्त रोग में सूजन, लाली, दर्द, दाह, तोद इन की तत्काल शांति के लिए अधिक प्रभावकारी है।

89 पुनर्नवादि तैल

शोफ (सूजन) पाण्डु और उदर में सिर और बदन पर लगाने तथा जहाँ अधिक उपद्रव है उस स्थान पर मलने के लिए उत्तम है।

90 प्रपुण्डरीकादि तैल

यह तैल बुढापे के आने के पहले बाल पकने में तथा दूसरे शिरोरोगों में सिर पर लगाने के लिए तथा नस्य के लिए मुख्य है। नस्य की मात्रा— 2 से 10 बूंद तक।

91 प्रभंजन विमर्दन कुषम्पु

सर्वांग वात में बदन पर लगाने के लिए उत्तम है। सब तरह के दर्द, भेद, तोद, स्तंभ आदि में तत्तत् स्थान पर मलने के लिए विशेष औषध है। मल कर एक घंटे के बाद गरम पांनी से स्नान करें।

92 प्रसारणी तैल (चेरियतु–छोटा)

यह भी वातरोगों में बदन पर लगाने तथा सेवन और नस्य के लिए विशिष्ट औषध है।

मात्रा— क्षीरबला की तरह।

93 प्रसारणी तैल (वलियतु–बडा)

वातरोगों में बदन पर लगाने तथा पान और नस्य के लिए 'चेरियतु' से बढ़ कर फलदायक है।

94 बलागुलूच्यादि तलै

गठिया, जुकांम और कफकोप में सिर पर लगाने के लिए अच्छा है। बदन पर भी लगा सकते हैं।

95 बला तैल

वातरोगों में यह मुख्य औषध है। आवर्तित तैलों के बाद सर्वप्रथम इस का नम्बर आता है। सेवन, नस्य, अंगों पर मलना आदि सब प्रकार से इस का उपयोग हो सकता है। आवरणवात, हृद्रोग और व्रणायाम (Tetanus) में इस का प्रभाव प्रशस्त है।

मात्रा— 30 से 120 बूंद तक।

96 बलाधात्र्यादि तैल

सिर को तर करने तथा सिर के रोगों में सिर पर लगाने के लिए उत्तम है। स्नान के एक घंटा पहले सिर पर लगा लें।

97 बलाश्वगन्धादि कुषम्पु

शरीर की पुष्टि, रक्त की शुद्धि एवं पुष्टि के लिए इस तैल को बदन पर मलकर कुछ देर तक हाथ फेंरने के बाद गरम पानी से स्नान करना चाहिए।

98 बलाश्वगन्धादि तैल

प्रतिश्याय (जुकाम) क्षय और रक्तदुष्टि में सिर पर लगाने ले लिए उत्तम है। इसको बदन पर भी मल सकते हैं।

99 बलाहठादि तैल

शिरोरोगों में सिर पर लगाने के लिए यह उत्तम है।

100 बालशोधिनी तैल

यह बच्चों को जुलाब लेने के लिए उत्तम है। किसी तरह की कठिनाई या विपति नहीं होती।

मात्रा— 4 से 8 मि. लिटर तक दूध में या गरम पानी में मिला कर सेवन कर सकते है।

101 ब्रह्मी तैल

आंखों को सुख देने तथा सिर को शीतलता देने के लिए इसको सिर पर लगा कर नहाना अत्यन्त फलदायक है।

102 भृङ्गामलकादि (चेरियतु)

आँख, कान, सिर इनकी सुरक्षा के लिए इसको सिर पर लगाना उत्तम है। स्नान के एक घंटा पहले सिर पर लगाना चाहिए।

103 भृङ्गामलकादि (वलियतु)

आँख, कान और सिर कीं स्वस्थता को बनाये रखने के लिए यह 'चेरियतु' से अधिक प्रभावकारी है। रोज सिर पर लगाकर नहाना चाहिए।

104 मंजिष्ठादि तैल

यह सिर को शीतलता तथा नयनों को सुख देता है। प्रतिश्याय (जुकाम) के लिए भी अच्छा है।

105 मधुयष्ट्यादि

गठिया तथा सूजन में सिर पर लगा सकते हैं।

106 मरिचादि तैल

तमक श्वास में तथा कफदोष संबन्धी शोफ रोगों में सिर पर लगाने के लिए यह उत्तम है।

107 महा कुक्कुटमांस तैल

किसीं भी तरह का वात हो यह तैल उत्तम औषध है। शोष जड़ता आदि उपद्रव होने पर इसका पान और अम्यंग कर सकते हैं।

मात्रा— क्षीरवला के जैसे।

108 महाबला तैल

वातरोगों में सेवन तथा अम्यंग के लिए मुख्य है।

109 महामाष तैल

सारे वातरोगों में खास कर संकोच वात में सेवन करने और बाहर अम्यंग के लिए विशेष औषध है। मात्रा— क्षीरवला के जैसे।

110 महाराज प्रसारणी तैल

त्रिद्रोष कोप में विशेषकर वातकोप में मुख्य औषध है। सारी इन्द्रियों को बल देता है स्त्रियों के पूयस्राव, वांझपन, गुल्म रोग इन के लिए भी मुख्य है।

111 महावज्रक तैल

जीर्ण व्रण, नाडी व्रण और दूसरे त्वचा संवन्धी रोगों में भी बाहरी उपयोग के लिए विशेष औषध है।

112 मालत्यादि तैल

यह सिर पर या दूसरे स्थानों के बाल झड़ने, बालों को कीड़ों के खा जाने के लिए दृष्टांत औषध है। वाल बनाने के वाद इस को लगा कर एक घंटा बैठें फिर स्नान करें। रोज इस का उपयोग करना चाहिए।

113 यष्टि मधूकादि तैल

खुजली, फोडा, फुंसी, विसर्प इन में सिर और बदन पर लगाने के लिए यह उत्तम तैल है। रक्त की दुष्टि को दूर करता है।

114 युवत्यादि (स्तन वर्धन तैल)

लड़कियां इस तैल को रोज नियत रूप से छाती पर लगा कर हाथ फेरा करें। क्रम से छाती भर जाएगी, स्तन निबिड हो कर उभर उठेंगे और स्तनों को बल भी होगा। इतना ही नहीं ये गुण बुढ़ापे में भी बने रहेंगे।

115 रास्नादि तैल

यह तैल प्रतिश्याय (जुकाम) और कफोपद्रवों में सिर पर लगाने के लिए प्रशस्त है। पीनस और फोडों में भी अच्छा असर करता है।

116 रास्ना दशमूलादि तैल

अर्दित वात (लकवा) में शिरोवस्ति पान और अभ्यंग के लिए यह विशिष्ट औषध है।

117 लाक्षादि तैल (चेरियतु)

रक्तशुद्धि तथा कृशता (शोष) में सिर और बदन पर लगा सकते हैं। बच्चों के लिए यह खास दवा है।

118 लाक्षादि नारियल का तेल

बच्चों के कफोपद्रवों में (सूजन) और शरीर के पतला होने में तथा दूसरे रोगों में भी यह सिर और बदन पर लगाना अच्छा है। रक्त को शुद्ध करता है, इस का यही विशेष गुण है।

119 लाक्षादि तैल (वलियतु)

रक्तदुष्टि के कारण होनेवाले रोगों में तथा शोष (पतला होना) में सिर और बदन पर लगाने के लिए अच्छा है।

120 लाक्षादि कुषम्पु

गुण और प्रभाव लाक्षा तैल के जैसे। केवल बदन पर मलने के उपयोगी है।

121 वचादि तैल

प्रतिश्याय (जुकाम) तथा अपची में सिरपर लगाने के लिए यह उत्तम है।

122 वचालशुनादि

यह तैल साधारणतया कर्णरोगों का शमन करता है; कान पककर पींव के बहने में तो इस का विशेष स्थान है। सिर पर लगा सकते हैं। कानों में भरना भी चाहिए।

123 वज्रक तैल

दुष्टव्रण तथा नाडीव्रण में मलने के लिए उत्तम औषध है।

124 वातमर्दनं कुषम्पु

अंगों में तोद और दर्द में तथा वातसंबन्धी दूसरे उपद्रवों में भी अंगों पर मलने के लिए तथा अभ्यंग के लिए अच्छा है।

125 वाताश्नी तैल

वातरोगों में सिर पर और बदन पर लगाने के लिए, सेवन तथा नस्य के लिए उत्तम है। मात्रां— क्षीरबला के जैसे।

126 विल्वपत्रादि तैल

तारन, (सिर की खुजली) प्रतिश्याय (जुकाम(फोडे, फुंसी आदि रोगों में सिर पर लगाने के लिए मुख्य तैल है। स्नान के एक घंटा पहले सिर पर लगाना चाहिए।

127 विल्वंपाच्चोट्यादि

यह तैल सिर को ठंडक पहुँचाता है और सुख देता है। कफकोप से होनेवाले सूजन आदि का शमन करता है।

128 वेणुपत्रादि तैल

अपची और कण्ठमाला में सिर पर थलने तथा व्रणों में लगाने के लिए यह विशेष औषध है।

129 व्रणरोपण तैल

व्रण किसी भी तरह के हों, इस तैल के उपयोग से ज़ल्दी भर जाते हैं। नीम के पत्ते या त्रिफला को डाल कर उबाले पानी से दोनों वक्त व्रण को धोकर साफ करना चाहिए। इस के बाद लिन्ट या कपडे का टुकड़ा इस तैल में भिगो कर व्रण पर रखना चाहिए। बीच–बीच में इस कपडे को इसी तैल से भिगाते रहना भी चाहिए।

130 शुद्धबला तैल

साधारण वातरोग और गठिया में सेवन, नस्य, अभ्यंग आदि के लिए यह उत्तम है। मात्रा और उपयोग क्रम क्षीरबला के जैसे।

131 शुद्धबला तैल 3 आवृत्ति

132 शुद्धबला तैल 7 आवृत्ति

133 सहचरादि (चेरियतु)

गले के नीचे आनेवाले किसी भी वातरोग में सेवन और अभ्यंग के लिए उत्तम है। खास कर गुन्म, उन्माद और योनिरोगों में इसका उपयोग कर सकते हैं। मात्रा और उपयोगक्रम क्षीरबला के जैसे।

134 सहचरादि 3 आवृत्ति

135 सहचरादि 7 आवृत्ति

136 सहचरादि (वलियतु)

अधःकाय के (गले के नीचे के) सारे वातरोगों में सेवन और अभ्यंग के लिए मुख्य है। मात्रा क्षीरबला के जैसे।

137 सहचरादि कुषम्पु

किसी भी वातरोग में खास कर संकोचवात में बदन पर मलने के लिए यह मुख्य है।

138 सिद्धार्थादि तैल

पामा, विसर्प और विचर्चिका (चिलन्नी) इन में बाहर मलने तथा सेवन के लिए अच्छा है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक। बच्चों के लिए कम मात्रा में दें।

139 सुरसादि तैल

लगातार होनेवाले प्रतिश्याय में (जुकाम) और दुष्ट पीनस में सिर पर लगाने तथा नस्य के लिए अच्छा है।

140 सौभाग्यवर्धन तैल

संभोग के समय इसे योनि के अन्दर मल देने से पति को सुखाधिक्य होता है जिससे स्त्रियों का सौभाग्य बढ़ जाता है।

141 हिंगुत्रिगुण तैल

वृद्धि, गुल्म इन रोगों में इस का सेवन करने से अत्यन्त लाभ होता है।

मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक। सवेरे या रात के भोजन के उपरान्त सेवन कर सकते हैं।

142 हिमसागर तैल

उन्माद आदि मानसिक रोगों में सिर पर लगाने से बड़ा लाभ हो सकता है।

कषाय वर्ग

1 अष्टवर्ग कषाय

वातरोगों में अच्छा है। मात्रा 5 से 15 मि. लिटर तक चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर सवेरे और शाम को भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

प्रक्षेपक— आवर्तित तैल। पथ्याचरण— शरीर श्रम से बचे रहना चाहिए मिर्च, इमली, गुरुपदार्थ ये वर्ज्य हैं। स्नान, पानी बिना उबाले पीना, मैथुन, दिन में सोना, रात को जागना, मद्यपान ये सभी निषिद्ध हैं। यदि बुखार न हो तो भात खा सकते हैं। लेकिन दीपन तथा शौच का हमेशा खयाल रखना चाहिए।

2 इन्दुकान्त कषाय

वातरोग, क्षय, मन्दाग्नि, शूला, जीर्णज्वर, इन में अच्छा फल देता है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर सबेरे—शाम को भोजन के पहले सेवन करना चाहिए। प्रक्षेपक— सेंधानोन। पथ्य—जहाँ तक हो सके गुरु वस्तुओं को न खाएँ।

3 कतक खदिरादि कषाय

सब तरह के प्रमेह रोगों में यह विशेष औषध है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक चार गुना उबालचर ठंडा किया पानी मिलाकर दोनों वक्त भोजन के पहले सेवन करना चाहिए। प्रक्षेपक—मेंहसंहारि गुटिका, बृहन्मेहान्तक या पुराना शहद।

पथ्य— शक्कर आदि मीठी चीजें न खाएँ, नये धान का चावल निषिद्ध है। जो (यव) या गेहुँ का उपयोग ही भोजन के लिए युक्त है। भैंस का दूध पी सकते हैं।

4 गुलगुलुतिक्त कषाय

गठिया, कोढ़, तथा दुष्ट व्रणों में यह मुख्य है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर सवेरे खाली पेट में सेवन करना चाहिए। प्रक्षेपक—स्वर्णसिन्दूर शुद्ध गन्धक या शहद।

पथ्य—बाज़ारी मिर्च, इमली, बिलकुल वर्ज्य हैं। ठंडे पानी में नहाना या पीना, दिन में सोना, मैथुन, रात को जागना ये सब निषिद्ध है। सेंधानोन नमक, हींग, सूरण, करैला, कड़ुए पटोल का फल, घी, मूँग का दाल, आग में भुना पापट उबाला मट्ठा, काली मिर्च, अदरख, नींबू, कड़ुआ नींबू, इन का उपयोग कर सकते हैं। उबाला दूध परिमित मात्रा में इस्तेमाल कर सकते हैं। हवा, धूप, ओस, वर्षा आदि लगना नहीं चाहिए। यदि पच जाए तो दोनों वक्त कषाय का सेवन कर सकते है।

5 चन्द्रशूरादि कषाय

कृमि की बाधा तथा कृमि संबन्धी रोगों में यह सिद्ध औषध है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर टंडा किया पानी मिलाकर सवेरे पीना चाहिए। प्रक्षेपक—सेंधानोन नमक और कृमिशोधिनी गुटिका।

पथ्य—सागपात की तरकारी, मांस, गुड़ इन को बिलकुल छोड देना चाहिएं।

6 दशमूल कटुत्रयादि कषाय

दमा, क्षय, (तपेदिक) छाती का दर्द इन के लिए प्रशस्त है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर टंडा किया पानी मिलाकर दोनों वक्त भोजन के पहले सेवन कर सकते हैं। प्रक्षेपक —कस्तूरी, जवाद कस्तूरी या आवर्तित क्षीरबला।

पथ्य—इमली और बाज़ारी मिर्च का उपयोग कम करें, ठंडे पानी में नहाना या उसे पीना नहीं चाहिए। मैथुन वर्ज्य है। कांफी पी सकते हैं, जिस में दूध, उबाल कर पिलाना चाहिए। चाय वर्जित है। बकरी के गोश्त का सूप पाचन—शक्ति के अनुसार पी सकते हैं।

7 दीप्यकादि कषाय

प्रसव के तुरंन्त बाद स्त्रियों को इस कषाय का सेवन करना चाहिए। यह प्रसव से होनेवाले क्लेशों, कठिनाइयों को दूर करता है। मन्दाग्नि, ग्रहणी, आमदोष आदि में भी यह विशेष लाभकारी है। मात्रा, पथ्य आदि धान्वन्तर कषाय के जैसे।

8 द्राक्षादि कषाय

ज्वर, मदात्यय, बेहोशी, प्यास, कामिला, रक्त की कैं, रक्त स्राव आदि रोगों में विशेष फल देता है।

9 धान्वन्तर कषाय

सब तरह के वातरोगों में तथा प्रसूता नारियों के लिए इसका लजिमी है।

मात्रा आदि दशमूल कटुत्रयादि के जैसे।

10 बलाजीरकादि कषाय

दमा, खाँसी, नाडियों का वैषम्य इन के लिए उत्तम है।

मात्रा आदि दशमूल कटुत्रयादि के जैसे।

11 बला पुनर्नवादि

गुल्म, उदर व्रण, मन्दाग्नि, ग्रहणी आदि उपद्रवों में भोजन के पहले और बाद सेवन कर सकते हैं।

12 महातिक्त कषाय

सारे पित्ताधिक रोगों में, दुष्ट व्रण, फिरंग, कोढ़, नाडीव्रण, भगन्दर आदि कठिन रोगों में इसका उपयोग परम प्रधान है।

मात्रा, पथ्य आदि तो गुलगुलुतिक्त कषाय के जैसे।

13 मूलकादि कषाय

बच्चों के करप्पन, (विसर्प) फुंसी, विचर्चिका (चिलन्नी), इनके लिए विशिष्ट औषध है। शौच ठीक होगा।

मात्रा— उम्र के अनुसार 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर टंडा पानी मिलाकर सवेरे-शाम सेवन करना चाहिए। ठंडे पानी में नहलाना नहीं चाहिए।

14 रास्नादि कषाय (चेरियतु)

गठिया और दूसरे वातिक रोगों में मुख्य है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर सवेरे और शाम को भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

प्रक्षेपक— आवर्तित तैल। पथ्य— शरीरश्रम वर्ज्य है। मिर्च, इमली, गुरु चीजें इन को छोड़ देना चाहिए। स्नान, टंडा पानी पीना, मैथुन, दिन में सोना, रात को जागना, शराब पीना ये सब निषिद्ध हैं। यदि बुखार न हो तो भात खा सकते हैं। पाचन शक्ति और शौच का खयाल करते रहना चाहिए।

15 रास्नादि कषाय (वलियतु)

सब तरह के वातरोगों में तथा गठिया में इस का उपयोग मुख्य है।

मात्रा, पथ्य आदि तो छोटे रास्नादि की तरह है।

16 वरणादि कषाय

अन्तर्विद्रधि तथा गुल्मन के लिए उत्तम है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

17 वरादि कषाय

मेद के बढ़ने और ज्यादा मोटा होने पर इस का सेवन मुख्य है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर सेवन करना चाहिए। प्रक्षेपक—लोहभस्म। दूध और मांस वर्ज्य है।

18 वाशागुलूच्यादि कषाय

पांडु, पित्त, कामिला इन में मुख्य है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर टंडा किया पानी मिलाकर सवेरे और शाम को सेवन करना चाहिए।

19 विदार्यादि कषाय

वात और पित्त के कोप से हानेवाली कृशता, गुल्म, ऊर्ध्ववायु, खाँसी आदि उपद्रवों में इसका उपयोग अधिक लाभकारी है। शरीर की पुष्टि होगी।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर दोनों वक्त भोजन के पहले सेवन करना चाहिए।

पथ्य— मिर्च और इमली का उपयोग कम करें। घी, दूध, बकरे का मांस, पाचन शक्ति के अनुसार उपयोग कर सकते हैं। अधिक शरीर श्रम मना है। मैथुन वर्ज्य है।

घृत वर्ग

1 अमृतप्राश घृत

शुक्लक्षय, बलहानि, कार्श्य, क्षतकास इन में मुख्य है। भोजन के पहले या पीछे सेवन कर सकते हैं।

पथ्य—विदार्यादि कषाय के जैसे। मात्रा— 10 से 20 ग्राम तक।

2 अशोक घृत

स्त्रियों के रोगों में सामान्य तथा योनिस्राव में विशेष औषध है। मात्रा— 15 से 50 ग्राम तक। पथ्य— अशोकारिष्ट के जैसे।

3 अश्वगन्धादि घृत

शुक्लक्षय, ओजोहानि तथा क्षयरोग में विशेष औषध है। मात्रा वगैरह अमृतप्राश घृत के जैसे।

4 आर्द्रक घृत

मन्दाग्नि और ग्रहणी में यह मुख्य औषध है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

5 इन्दुकान्त घृत

जीर्ण ज्वर, खाँसी, सूजन और पेट के दर्द में मुख्य है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

6 कण्टकारि घृत

यह घृत खाँसी में मुख्य है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

7 कल्याणक घृत

अपस्मृति, उन्माद, पाण्डु और पैत्तिक रोगों में इस का उपयोग मुख्य है। सवेरे नहाकर शुद्ध हो कर इस का सेवन करना चाहिए। मात्रा— 10 से 25

8 खदिरसारादि घृत

यह चमड़े के रोगों में प्रशस्त है। खुजली, फुंसी, पामा आदि उपद्रवों में भी फलकारी है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

9 गुलगुलुतिक्तक घृत

चमड़े के रोग, गठिया और व्रण में विशेष औषध है। पथ्य— गुलगुलु तिक्त कषाय के जैसे। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

10 ग्रहण्यन्तक

मन्दाग्नि और ग्रहणी के लिए प्रशस्त है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

11 चाङ्गेर्यादि घृत

ग्रहणी, अर्श, गुद का भ्रंश इन में मुख्य है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

12 जात्यादि घृत

सब तरह के व्रणों की शुद्धि के लिए तथा व्रण को भराने के लिए यह घृत मुख्य औषध है। व्रणों में मल सकते हैं या इस से धारा कर सकते हैं।

13 जीवन्त्यादि घृत

यह नेत्ररोगियों को रात के भोजन के बाद सेवन करने के लिए विहित है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

14 डाडिमादि घृत

पित्त, पाण्डु और मन्दाग्नि में विशेष फल देता है। पेट में होने वाले वात संबन्धी सारे उपद्रवों के लिए भी अच्छा औषध है। गर्भिणियों को सुख प्रसव में भी यह उपयोगी है।

15 तिक्तक घृत

पित्त संबन्धी रोगों में, त्वचा संबन्धी उपद्रवों में तथा व्रणों में यह प्रशस्त औषध है। पथ्य— तिक्तक कषाय के जैसे। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक। खाली पेट में सेवन करके बाएँ पार्श्व के बल लेटना चाहिए। हजम होने पर पथ्य का ख्याल करके भोजन कर सकते हैं। घी के सेवन के तुरन्त बाद भोजन करते हुए मट्ठा मिलाना वर्ज्य है।

16 त्रिकण्टकादि घृत

प्रमेह में अतीव उत्तम है। उपयोग धान्वन्तर घृत के जैसे। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

17 त्रिकण्टक घृत

मूत्ररोध और पूयमेह में यह प्रशस्त औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

18 त्रिफला घृत

नेत्र रोगियों को सेवन करने के लिए यह प्रशस्त है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

19 दशस्वरस घृत

कामिला और पाण्डु रोगों के लिए उत्तम है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

20 देहपोषण यमक

क्षयरोग में शरीरपुष्टि के लिए यह मुख्य औषध है। मात्रा— 7 से 15 मि. लिटर तक।

21 धात्र्यादि घृत

योनिस्राव और मूत्रकृच्छ्र में मुख्य है। मात्रा— 10 से 20 ग्राम तक।

पथ्य—मिर्च, इमली, लहसन, कुलथी आदि उष्णवीर्य वस्तुओं को छोड़ देना चाहिए। मैथुन और शारीरिक श्रम मना है। घी और दूध का पाचनशक्ति के अनुसार उपयोग कर सकते हैं।

22 धान्वन्तर घृत

प्रमेह रोग में सेवन करने के लिए अच्छा है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

23 नलदादि घृत

मन्दबुद्धि, उन्माद आदि के लिए विशिष्ट औषध है। दिमाग के विकास के अभाव से बच्चों को जो मूढ़ता, अपस्मृति आदि उपद्रव दिखाई इपते हैं

उन के लिए इसका बड़ा प्रयोजन है। मात्रा—बच्चों के लिए 2 से 5 मि. लिटर तक। सयानों के लिए 10 से 25 मि. लिटर तक।

24 नागवला सर्पिस

क्षय, उरःक्षत (छाती में अभिघात) और खाँसी में उत्तम औषध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

25 निर्गुण्ड्यादि घृत

बच्चों के रोगों में खास कर ग्रहणी में अच्छा फल देता है। मात्रा पांच बरस के बच्चे के लिए 2 से 5 मि. लिटर तक।

26 नेत्र तर्पण सर्पिस

यह नेत्ररोगों में आँखों में तर्पण के लिए विहित है।

27 पंचगव्य घृत

बुद्धि को तेज करने तथा अपस्मृति को शान्त करने के लिए यह उत्तम है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

28 महा पंचगव्य घृत

बुद्धिशक्ति को बढ़ाने तथा अपस्मृति आदि मानसिक रोगों को शान्त करने के लिए यह घृत विशिष्ट औषध है। मात्रा पंचगव्य घृत के जैसे।

29 पटोलादि घृत

आँख के रोग में सेवन करने के लिए विशेष औषध है। मात्रा और उपयोग जीवन्त्यादि घृत के जैसे।

30 पप्फणादि घृत

यह बुद्धि के लिए बढ़िया औषध है। विरेचक भी है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

31 पालण्डव घृत

अर्शो राग के लिए अत्यन्त विशिष्ट है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

32 पिप्पल्यादि घृत

जीर्ण ज्वरों में विशिष्ट औषध है। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक

33 फल सर्पिस

योनि रोग को शान्त करके यह सन्तान लाभ में सहायता करता है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

34 बृहच्छागलादि घृत

वात रोगों में तथा क्षय रोग में मुख्य है। उपयोग का क्रम अमृतप्राश के जैसे। मात्रा— 10 से 25 ग्राम तक।

35 ब्राह्मी घृत

अपस्मृति, उन्माद आदि मानसिक रोगों में प्रशस्त है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

36 महाकल्याणक घृत

मनोरोगों में तथा पैत्तिक रोगों में अत्यन्त लाभकारी है। उपयोग कल्याणक घृत के जैसे। मात्रा— 10 से 25 मि. लिटर तक।

37 महाकूश्माडक घृत

चमड़े के दोष, व्रण और भगन्दर में अत्यन्त प्रशस्त है। यह सारे पैत्तिक रोगों में भी अच्छा फल देता है। मात्रा वगैरह तिक्तक घृत के जैसे।

38 महातिक्तक लेप

चमड़े की वर्णहानि, सख्त खुजली (नागा खुजली) आदि में बाहरी उपयोग के लिए उत्तम है। नीम के पत्ते या त्रिफला डाल कर उबाले पानी से दोनों वक्त धोकर सफाई करने के बाद खुजली के स्थान पर इस का लेप करना चाहिए।

39 महात्रैफल घृत

नेत्ररोगों में सेवन करने के लिए यह श्रेष्ठ औषध है। मात्रा आदि त्रैफल घृत के जैसे।

40 महाभूतराव घृत

भूतबाधा, अपस्मृति, देवताओं और भूतों का आवेश, उन्माद आदि कई रोगों में यह अनुभवसिद्ध औषध है। सेवन और नस्य दोनों के लिए उपयोगी है। सन्धियों में मलना भी अच्छा है। मात्रा— 5 से 25 ग्राम तक।

41 महाषट्फल घृत

जीर्ण ज्वर, मन्दाग्नि तथा कमजोरी में यह बड़ा फल देता है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर नक।

42 महास्नेह

सब तरह के वात रोगों में खासकर अपदानक, अपतन्त्रक आदि में सेवन और नस्य के लिए विशिष्ट औषध है। बाहर स्वेदादि के लिए भी इस का उपयोग कर सकते हैं। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

43 माँस सर्पिस

शरीर की पुष्टि के लिए तथा क्षय रोग की शान्ति के लिए यह विशेष औषध है। मात्रा-- 5 से 25 मि. लिटर तक।

44 मिश्रक स्नेह

यह गुल्म रोग में विरेचन के लिए अच्छा है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

45 रास्नादि घृत

वातरोग में तथा गठिया में सेवन करने के लिए यह उत्तम औषध है। मात्रा-- 15 से 25 मि. लिटर तक।

46 लशुन घृत

गुल्म और शूल में यह मुख्य औषध है। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक।

47 वरणादि घृत

सिर दर्द, पेट में दर्द, मन्दाग्नि, अन्तर्विद्रधि, वृद्धि, गुल्म, गठिया आदि में मुख्य औषध है। उपयोगक्रम सुकुमार घृत के जैसे।

48 वस्त्यामयान्तक घृत

सब तरह के वस्तिरोगों में तथा योनिरोग और मूत्रकृच्छ्र में यह विशिष्ट औषध है। मात्रा आदि धात्र्यादि घृत के जैसे।

49 वाराह्यादि घृत

यह पूयमेह तथा मूत्रकृच्छ्र में मुख्य औषध है। मात्रा आदि धात्र्यादि घृत के जैसे।

50 विदार्यादि घृत

क्षय, खाँसी, कृशता आदि को शान्त करने के लिए यह घृत मुख्य है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

51 वीरतरादि घृत

मूत्रकृच्छ्र, मूत्र में पत्थर (अश्मरी) आदि वस्ति रोगों में यह उत्तम औपध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

52 वृष घृत

रक्तपित्त और खाँसी में मुख्य औपध है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

53 शतधौत घृत

पैत्तिक विसर्प, दाह, सूजन, फोड़ा और विप विकारों में अंगों पर मलने के के लिए उत्तम है।

54 शतावर्यादि घृत

पूयमेह, मूत्रकृच्छ और पैत्तिक उपद्रवों में यह बढ़िया औपध है। पथ्य शतावर्यादि कपाय के जैसे। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

55 शशावाशादि घृत

क्षय, खाँसी, क्षतकास इन में मुख्य है। शरीर की पुष्टि के लिए भी अच्छा है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

56 शाल्मली घृत

पूयस्राव, मूत्रकृच्छ्र आदि के लिए उत्तम है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

57 शूलारि घृत

पेट के दर्द तथा गुल्म रोगों में यह श्रेष्ठ औपध है। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

58 षट्पल घृत

मन्दाग्नि, ग्रहणी तथा क्षय के लिए अच्छा है। मात्रा— 5 से 25 मि लिटर तक।

59 सर्वामयान्तक घृत

सारे रोगों में खास कर वात रोगों में इसका उपयोग कर सकते हैं। मात्रा— 5 से 25 मि. लिटर तक।

60 सारस्वत घृत

बुद्धि को तेज करने तथा बातों की स्पष्टता के लिए यह उत्तम है। मात्रा— एक साल की अवस्था के बच्चों के लिए 2 से 5 मि. लिटर तक; सयानों के लिए 5 से 25 मि. लिटर तक।

61 सुकुमार घृत

गुल्म, रक्तगुल्म, आन्त्रवायु और आन्त्रवृद्धि के लिए प्रशस्त औषध है। आर्तव की शुद्धि के लिए यह अत्यन्त विशिष्ट है। मात्रा—15 से 25 मि. लिटर तक।

62 सुखप्रसवद घृत

इस औषध के सेवन से प्रसव की विघ्न बाधाएँ दूर होती हैं। गर्भकाल में जो वातिक उपद्रव होते हैं वे इस से शान्त होते हैं। गर्भस्थ शिशु को कोई रोग नहीं होता। बुद्धि भी तेज होती है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक। आठवें महीने से लेकर सवेरे सेवन कर सकती हैं या भात के साथ मिलाकर खा सकती हैं। कंजी के गरम पानी में भी सेवन कर सकती हैं।

63 सूरणादि घृत

अर्शो रोग तथा मन्दाग्नि में सेवन करने के लिए यह मुख्य है। मात्रा— 15 से 25 मि. लिटर तक।

20 विषालवेरादि कषाय

गुल्म, शूल इन के लिए विशेष उपयोगी है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक।

21 व्याघ्रयादि कषाय

वात–कफ कोप से होनेवाले ज्वर, खाँसी, दमा इन में इस कषाय का प्रभाव प्रशस्त है। मात्रा और उपयोग क्रम दशमूलकटुत्रयादि कषाय के जैसे।

22 शीतज्वरारि कषाय

इन्फ्लुवेंसा और विषमज्वर, (मलेरिया) में यह कषाय मुख्य है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर दोनों वक्त सेवन करना चाहिए।

23 शोणितामृतं कषाय

रक्तशुद्धि के लिए तथा खुजली, फोड़ा, फुंसी इन को बिलकुल मिटा देने के लिए यह सिद्ध औषध है।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर सेवन करना चाहिए। प्रक्षेपक–शुद्ध गुलगुलु या शुद्ध गन्धक।

पथ्य— बाजारी मिर्च और इमली वर्ज्य है।

24 सुकुमारम् कषाय

स्त्रियों के सब तरह के रोगों में खासकर गर्भपात्र संबन्धी रोगों में यह मुख्य है। बीज दोषों में पुरुष भी इसका सेवन किया करते हैं।

मात्रा— 5 से 15 मि. लिटर तक। चार गुना उबालकर ठंडा किया पानी मिलाकर सवेरे और शाम को भोजन के पहले सेवन करना चाहिए। प्रक्षेपक– सेंधानोन नमक काँत सिन्दूर या सुकुमारम् घृत।

पथ्य— ठंडी चीजें, पाचनशक्ति तथा क्रमशौच में प्रतिबन्ध करनेवाली वस्तुएँ खाना नहीं चाहिए। ठंडा पानी, दिन में सोना, मैथुन ये वर्ज्य हैं। मिर्च और इमली निषिद्ध है।

गुटिकाएँ

1 अग्निकुमाररस

यह गुटिका आम ज्वर में, जीर्णज्वर में, सन्निपात में तथा मंदाग्नि, ग्रहणी, छर्दी, अतिसार आदि उपद्रवों में अदरख के स्वरस में निर्गुंडी (शंभालु) रस में या उचित कषाय में मिलाकर सेवन कर सकते हैं। सयानों के लिए दोनों वक्त एक एक गुटिका तथा बच्चों के लिए आधी गुटिका या चौथा भाग यथायुक्ति दे सकने हैं।

2 आकार करभादि

यह मैथुन में शीघ्र इन्द्रिय स्खलन को रोकती है तथा यथार्थ रतिसुख देती है। रोज एक एक गुटिका दूध में घोलकर सेवन कर सकते हैं।

3 आन्त्रकुठार (चेरियतु–छोटा)

आन्त्रशूल गुल्म तथा मंदाग्नि की शिकायत में अदरख के रस में सेवन करने से शांति मिलेगी।

4 आन्त्रकुठार (वलियतु–बडा)

आन्त्रवायु और गुल्म में विशेष फल देता है। आसानी से विरेचन भी करेगा। गरम पानी में सेवन करना चाहिए।

5 आशाल्यादि गुटिका

दमा, खाँसी, हिचकी, नाडियों का बिगडना इन के लिए अच्छा है। जीरक के कषाय में सेवन करना चाहिए।

6 कनकताम्रादि वर्ती

व्रणशुक्ल, अर्म आदि नेत्ररोगों में यह सिद्धौषध है। स्तन्य या शहद में पीसकर आँख में मलना चाहिए।

7 करुत्त (काला) गुटिका

सिरदर्द या प्रतिश्याय में (जुकाम) बढ़िया दवा है। स्तन्य या एरंडी के तेल में घोल कर माथे पर लगाना चाहिए।

8 काङ्कायन गुटिका

अर्शोरोग के लिए अच्छी दवा है। उबाले मट्ठे में घोल कर सेवन कर सकते हैं।

9 काचयापनम् वर्ती

तिमिर और काच का शमन करती है। शहद में घोल कर आँख में लगाना चाहिए।

10 कृमिघ्न वटिका

बच्चों के कृमि के उपद्रव में, उम्र के अनुसार एक या दो गुटिकाएँ सवेरे उचित कषाय में, उबाले मट्ठे में या गरम पानी में सेवन कराना चाहिए। साथ ही दूसरे दिन जुलाब लेना भी चाहिए।

11 कृमिशोधिनी गुटिका

कृमि के उपद्रव में विरेचन के लिए उत्तम है।

12 कैविष परिहारी गुटिका

कैविष (गर) तथा दूषीविष के उपद्रव में मुख्य है। तुलसीरस, हल्दी के रस, ठंडे पानी या घी में सवेरे सेवन करना चाहिए।

13 कैशोर गुलगुलु वटिका

दुष्ट व्रण तथा चमडे के रोगों में यह हित है। शहद में घोल कर सेवन कर सकते हैं।

14 कौंपञ्चादि (पांच सीगें) गुटिका

बच्चों के दमा, बुखार आदि में मुख्य है। जीरा के कषाय में या स्तन्य में घोल कर, कई बार करके, सेवन कराना चाहिए।

15 खदिर गुटिका

यह सारे मुखरोगों में खासकर दांत के रोगों में फलकारी है। एक एक गुटिका दांत मांजने के बाद दोनों वक्त दो तीन घंटों तक मुँह में रखते रहें।

16 गर्भरक्षिणी (महाधान्वन्तरं) गुटिका

यह गर्भिणियों के सारे उपद्रवों को तुरन्त दूर करती है। सुखप्रसव में मदद देती है। माता और संतान को स्वास्थ्य और शक्ति देती है। वात

विकार के कारण होनेवाले नाडीवैषम्य, दमा, खांसी आदि की शिकायत में दूसरे लोगों को भी उपयोगी है।

17 गोपीचन्दनादि

यह बच्चों के बुखार, दमा, खांसी, ग्रहणी आदि रोगों में भूत ग्रह आदि वालपीडाओं में अतिशय फल देता है। स्तन्य या जीरा के कषाय में घोल कर सेवन कर सकते हैं।

18 गोरोचनादि

सन्निपात, बुखार, दमा, खाँसी, छर्दी इन के लिए विशेष औषध है। जीरा के कषाय में सेवन कर सकते हैं।

19 चन्दनादि वर्ती

आँख के रोगों में मुख्य औषध है।

20 चन्द्रप्रभा वटिका

प्रमेहसंबन्धी रोगों में तथा अश्मरी आर्तवदोष, प्लीहा, भगन्दर आदि रोगों में आशु फलकारी है।

21 चाङ्गेर्यादि गुटिका

अतिसार में जब कफ और रक्त जाता है वहां यह मुख्य है। दूसरे अतिसार में भी, गूदे का तोद, पेटदर्द आदि अवस्थाओं में इसका उपयोग कर सकते हैं। लहसुन के रस शहद या उपयुक्त कषाय में सेवन करना चाहिए।

22 चुक्कुंतिप्पल्यादि

जीर्णज्वर में अदरख के रस में इस का सेवन कर सकते हैं।

23 चेंचिल्यादि

एक गुटिका 24 औन्स शुद्ध जल में मिलाकर छानने के बाद लिंग के व्रण में धारा कर सकते हैं।

24 ज्वरांकुश गुटिका

बुखार को रोकने के लिए अच्छा है। उपयोग का क्रम चुक्कुं तिप्पल्यादि के जैसे।

25 धान्वन्तर गुटिका

यह वात, दमा, हिचकी, नाडियों का वैषम्य इनमें मुख्य है। धान्वन्तर कषाय में या जीरा के कषाय में सेवन कर सकते हैं।

26 नयनामृत वर्ती

नेत्ररोगों में विशेष औषध है। उसका उपयोगक्रम कनक ताम्रादि का तरह है।

27 नवायसम् गुटिका

यह पाण्डु, शोफ, कामिला, रक्ताल्पता आदि रोगों में सब से अधिक लाभकारी है। एक गुटिका मट्ठे में, शहद में, घी में या गरम पानी में सेवन कर सकते हैं।

28 निर्गुण्ड्यादि गुटिका

बच्चों के बुखार, हिचकी, दम घुटना, चौंक पड़ना, अपस्मृति आदि उपद्रवों में मुख्य है। स्तन्य में सेवन कर सकते हैं।

29 नीरूर्यादि

प्रमेह के लिए अच्छा है। आवले के स्वरस में या हल्दी स्वरस में सेवन कर सकते हैं।

30 पट्ठुपंचकादि

मंदाग्नि, ग्रहणी, पेट में विदाहिता आदि के लिए विशेष औषध है।

31 पाठादि

बच्चों की ग्रहणी, बुखार और अतिसार में यह विशेष फल देती है।

32 पाशुपत वर्ती

तिमिर रोग में यह विशेष औषध है। उपयोगक्रम कनकताम्रादि के बराबर है।

33 पोनकारादि

पेट के दर्द में यह श्रेष्ठ औषध है। अदरख के स्वरस में सेवन कर सकते हैं। गरम पानी में भी सेवन कर सकते हैं।

34 बालप्रिया गुटिका

बच्चों के पेट का स्तम्भन, बुखार, अपस्मृति, मन्दता आदि सारे उपद्रवों में यह सिद्ध औषध है, विरेचक भी है।

35 बृहत् कस्तूरी भैरव

यह आम ज्वर, जीर्ण ज्वर तथा सारे विषमज्वरों में सब से बढ़ कर फल देती है। दमा, खाँसी, हृद्रोग, क्षय आदि रोगों में भी इस के सेवन से फायदा होता है। अदरख का रस, शहद, उचित कषाय या अरिष्ट में मिलाकर इसका सेवन कर सकते हैं।

36 भुक्तंजरी गुटिका

दीपन के लिए श्रेष्ट है। गरम पानी में सेवन करना चाहिए।

37 मण्डूर वटक

पाण्डुरोग में इस का बडा प्रभाव होता है। मट्ठे में सेवन करना चाहिए।

38 मर्म गुटिका (चेरियतु–छोटा)

सूजन, फोडे इनमें बाहर मलने से तुरंत आश्वास मिलता है। शहद, घी, शतधौत घृत या खजित में घोलना चाहिए।

39 मर्म गुटिका (वलियतु–बडा)

सब तरह के मर्मक्षत तथा मर्मों में होने वाले फोडों फुँसियों के लिए विशेष उपयोगी है। छोटी मर्म गुटिका की विधि से बाहर मल सकते हैं; घी में घोल कर सेवन भी कर सकते हैं।

40 महाज्वरांकुशम्

सन्निपात तथा दूसरे ज्वरों में अच्छा फल देती है। उपयोग का क्रम चुक्कुंतिप्पल्यादि के जैसे।

41 मानसमित्र वटक

उन्माद, अपस्मृति, मन्दबुद्धिता, स्मृतिहानि आदि मानसरोगों में सद्यःफल देने वाला, इस को छोड़ दूसरा कोई औषध नहीं हो सकता। यह दोनों वक्त खाली पेट में दूहने की गरमी (धारोष्ण) के साथ गाय के दूध में या महाकल्याणक, सारस्वत आदि घृत में मिला कर सेवन करना चाहिए।

42 मुक्कामुक्कद्ववादि

यह ज्वरों के आरंभ में देने लायक है। पाचनामृत आदि किसी कषाय में गरम पानी में या अदरख के रस में सेवन कर सकते हैं।

43 मेहसंहारी गुटिका

प्रमेह के लिए वढ़िया औषध है। उपयोग का क्रम नीरूर्यादि के जैसे।

44 यकृदरि वटिका

पांडु, कामिला, आदि जिन रोगों को, असाध्य समझ कर उपेक्षा करते हैं उन गंभीर यकृत् संवन्धी रोगों में, प्लीहोदर विषज्वर आदि दूसरी व्याधियों में यह असाधारण प्रभाव दिखाता है। बच्चों के पेट की घनता के लिए विशेष फल देता है। इसको उपयुक्त कषायों में मट्ठा या अदरख के रस में रोहितारिष्ट, तिप्पली कषाय, शहद इन में मिला कर दोनों वक्त सेवन कर सकते हैं।

45 योगराज गुलगुलु वटिका

त्वग्दोष, गठिया, व्रण इनमें इसका उपयोग मुख्य है। शहद में मिलाकर दोनों वक्त भोजन के पहले सेवन कर सकते हैं।

46 वायुगुटिका (कस्तूर्यादि गुटिका)

दमा, हिचकी, नाडियों का बिगडना, सन्निपात अपस्मृति, वेहोशी आदि में तात्कालिक शांति के लिए यह उपयोगी है। जीरा के कषाय में सेवन करना चाहिए।

47 विमला वर्ती

सारे नेत्ररोगों में फलदायक है। उपयोगक्रम कनकताम्रादि के जैसे।

48 विरेचन गुटिका

यह जुलाव लेने में उपयोगी है। ठंडे पानी में सेवन करना चाहिए। घी में भिगो कर निगल भी सकते हैं। दस्त को रोकने के लिए दही के साथ भोजन करें।

49 विल्वादि

मृदु ज्वर, ग्रहणी, विष, छर्दी, अतिसार इन में इस के सेवन से शांति मिलेगी।

50 विषमज्वरान्तक

यह मलेरिया तथा दूसरे ज्वरों में अनुभवसिद्ध है। पंचतिक्त कषाय में अदरख के रस या गरम पानी में इसका सेवन कर सकते हैं।

51 शूलकुठार गुटिका

पेट का दर्द जो स्थायी है इस से शांत होगा। विरेचन भी होगा।

52 श्वासानन्दम् गुटिका

इस का फल तथा उपयोगक्रम धान्वन्तर गुटिका के समान है।

53 श्वेतगुञ्जादि गुटिका

प्रमेह में इस का असीम प्रभाव है।

54 षाण्माक्षिक वर्ती

तिमिर, अर्म आदि नेत्ररोगों में इस का विशेष उपयोग है। उपयोग क्रम कनकताम्रादि के जैसे।

55 सुखभेदी गुटिका

इस से एक दो गुटिकाएँ रात के भोजन के बाद निगलकर सो जाए तो सवेरे शौच ठीक होता है और रुचि और पाचनशक्ति होती है।

56 सुनेत्री वर्ती

सारे नेत्ररोगों में यह उपयोगी है। उपयोग क्रम कनक ताम्रादि के बराबर है।

57 सुवर्णमुक्तादि

सन्निपात और ज्वर में यह बडी ही उपयोगी है। जीरा के कषाय में या स्तन्य में सेवन कर सकते हैं।

58 सेतुबन्धम् गुटिका

अतिसार में यह सत्वर फल देती है। शहद में सेवन कर सकते हैं।

59 हिंग्वादि गुटिका

मंदाग्नि, अरुचि, गुल्म, स्तंभन आदि उपद्रवों में विशेष फलकारी है। उबाले मट्ठे में, गरम पानी में या अदरख के रस में सेवन कर सकते हैं।

चूर्ण वर्ग

1 अमृतादि चूर्ण

यह प्रमेह रोग में अनुभवसिद्ध है। मूत्र के शक्कर को कम करके कमज़ोरी दूर करने के लिए मुख्य औषध है। वस्ति संबन्धी दूसरे रोगों में भी इसका उपयोग कर सकते हैं। मात्रा— 3 से 10 ग्राम तक मट्ठा, धान्वन्तर घृत, आवर्तित धान्वन्तर, वस्त्यामयान्तक घृत आदि में से किसी एक में मिलाकर सेवन कर सकते हैं। यथोचित कषाय में या अरिष्ट में मिलाकर भी सेवन किया जा सकता हैं।

2 अवलगुजबीजादि चूर्ण

श्वित्र में लेपन करने के लिए यह विशिष्ट औषध है। गोमूत्र में भी घोलकर लेपन कर सकते हैं।

3 अविपत्ति चूर्ण

पैत्तिक रोगों में विरेचन के लिए यह अच्छी दवा है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक गरम पानीं में सेवन करना चाहिए।

4 अष्ट चूर्ण

गुल्म रोग, मन्दाग्नि, ग्रहणी इन में विशेष उपयोगी है। मात्रा— 2 से 5 ग्राम तक मट्ठे में सेवन कर सकते हैं या घी मिलाकर भात के साथ खा सकते हैं।

5 इन्दुप्पुकाणम्

दीपन और शौच ठीक करने के लिए अच्छा है। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक गरम पांनी में या मट्ठे में सेवन करना चाहिए।

6 एलादि चूर्ण

खुजली, फोडा, फुँसी आदि में मुख्य उपयोगी दवा है। रोग के उपयुक्त तैल में या नारियल के दूध में मिलाकर लेप कर के फिर उबटन करना चाहिए।

7 कच्चोरादि चूर्ण

अधिक गर्मी, सिर दर्द, उन्माद आदि में सिर पर कुषम्पू डालने, लेप करने तथा स्नान के बाद सिर पर डाल कर उबटन करने के लिए यह उत्तम चूर्ण है।

8 कपित्थाष्टक

अतिसार और ग्रहणी में उपयोगी है। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक शहद या उबाले मट्ठे में सेवन कर सकते हैं।

9 कर्पूरादि (चेरियतु–छोटा)

खांसी, दमा, क्षय, अरुचि, मन्दाग्नि इन में मुख्य है। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक शहद में घोल कर या यों ही बार–बार कर के सेवन कर सकते हैं।

10 कर्पूरादि (वलियतु–वडा)

खांसी, क्षय, अरुचि और मन्दाग्नि की शिकायत में मुख्य है। मात्रा— 2 से 5 ग्राम तक। उपयोग का क्रम 'छोटा' के जैसे ही।

11 गुलगुलु पञ्चपल

दुष्ट व्रण, भगन्दर, कोढ़ आदि रोगों में प्रशस्त है। मात्रा— 2 से 5 ग्राम तक। शहद में या यथोचित घृतों में सेवन करना चाहिए।

12 गुलगुल्वादि

यह खाज, खुजली, फुंसी, पामा, कोढ़ आदि में विशेष उपयोगी है। यथोचित तैलों में घोल फर उपद्रव होनेवाले अंगों पर मलना तथा उबटन करना चाहिए।

13 डाडिमाष्टक

अतिसार, ग्रहणी आदि में उपयोगी है। मात्रा आदि तो कपित्थाष्टक के जैसे।

14 तालीसपत्रादि

अन्न की रुचि और पाचनशक्ति को वढ़ाने तथा खांसी, दमा और स्वरसाद को शान्त करने के लिए उत्तम औषध है। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक है। कई बार करके सेवन करें।

15 त्रिफलादि

जो नेत्ररोग से पीडित हैं तथा जिन को अनजाने इन्द्रिय स्खलन होता है उन के लिए यह मुख्य है। रात के भोजन के बाद शहद या घी में सेवन कर सकते हैं। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक।

16 दशनकान्ति

मुंह में वदवू, दन्त मांस (ममूडा) में पाक, रक्त का बहना आदि सारे मुंह के रोगों में दांत मांजने तथा कुल्ला करने के लिए उत्तम औषध है।

17 दीप्यकादि

मंदाग्नि, ग्रहणी और गुल्म में तथा प्रसूता नारियों के लिए मुख्य औषध है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक। गरम पानी, शहद या घी में सेवन कर सकते हैं।

18 नवायस चूर्ण

यह पाण्डु, सूजन, कामिला, रक्ताल्पता, मन्दाग्नि, आलस्य आदि रोगों में उत्तम औषध है। 1 से 3 ग्राम तक उबाले मट्ठे में या उबाले पानी में अथवा शहद या घी में सेवन कर सकते हैं।

19 नाराचक चूर्ण

उदर पाण्डु, गुल्म आदि रोगों में विरेचन के लिए उत्तम है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक गरम पानी में सेवन करना चाहिए।

20 नासिका चूर्ण

शिरोरोगों में तथा दुष्ट पीनस आदि नाक के रोगों में प्रशस्त है। थोडा–सा लेकर सूंघना चाहिए।

21 निंब हरिद्रादि

खुजली और विसर्प में यह चूर्ण मट्ठे में या तैल में मिला कर अंगों पर मल दें; पीछे हाथ से उबटन कर निकाल दें।

22 निंबादि

यह त्वग्दोष, खाज, खुजली, फुंसी, पामा, पित्तकोप और कफकोप में सेवन करने तथा बाहर मलने के लिए उत्तम है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक। गरम पानी में या मट्ठे में घोल कर सेवन करो।

23 पंचकोल चूर्ण

इस का कार्य, फल, उपयोग, मात्रा आदि दीप्यकादि चूर्ण के जैसे।

24 पंचगन्ध चूर्ण

पित्तोपद्रव, सिर का दाह, उन्माद, शिरोरोग, उनीन्दी,(निद्राहानि) सिरदर्द आदि उपद्रवों में सिर पर लगाने तथा घोल कर लेप के लिए अच्छा है।

25 पथ्यादि

शोफ, कामिला, उदर आदि रोगों में तथा मुखरोगों में यह मुख्य औषध है। इससे विरेचन भी होता है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक। गरम पानी में या मट्ठे में सेवन कर सकते हैं।

26 पाठादि

मसूडे से संबद्ध सारे उपद्रवों में शहद में घोलकर मल सकते हैं। इस से दांत भी मांज सकते हैं।

27 पीतक चूर्ण

मुँह के व्रण आदि सारे रोगों में मुख्य है। घी या शहद में मिला कर कुल्ला करना चाहिए।

28 पुष्यानुग चूर्ण

रक्तातिसार, रक्त बहनेवाले अर्शोरोग, रक्तपित्त और योनिरोग में मुख्य है। चावल के धोवन में (तुषोदक) या शहद में मिलाकर सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

29 भास्कर लवण

यह अरुचि अजीर्ण और शूल में विशेप औषध है। मट्ठे में सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

30 मधुस्नुह्यादि

व्रण, फोडे, फुँसी, पामा आदि रोगों में सेवन करने के लिए मुख्य है। घी या शहद में मिलाकर सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

31 मुस्तामृतादि

खाज खुजली विसर्प आदि में निम्बाहरिद्रादि के जैसे उपयोग कर सकते हैं।

32 यवान्यादि चूर्ण

यह मन्दाग्नि, अरुचि, ग्रहणी आदि रोगों में मुख्य है। मात्रा– 2 से 5 ग्राम तक शहद में घोल कर सेवन कर सकते हैं।

33 योगराज

त्वग्दोष, भगन्दर, व्रण इन में मुख्य है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक। शहद या घी में सेवन कर सकते हैं।

34 रजन्यादि

बच्चों के सब तरह के रोगों में खासकर दांत के निकलते समय होनेवाले उपद्रवों में यह खास दवा है। मात्रा– 1 से 3 ग्राम तक घी और शहद मिला कर सेवन कर सकते हैं।

35 रास्नादि चूर्ण

प्रतिश्याय (जुकाम), बुखार, सन्निपात इन में सिर पर लगाने के लिए उत्तम है। उचित घृत में या संस्कृत एरंडी के तेल में घोल कर शिरोलेप भी कर सकते हैं।

36 लाक्षादि

उरःक्षत (छाती में अभिघात से होनेवाला) रक्तपित्त, क्षय आदि में मुख्य है। शहद या दूध में सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 2 से 5 ग्राम तक।

37 विळंगादि

चर्बी की वृद्धि, अत्यंत मोटापन इन के लिए मुख्य है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक शहद में मिलाकर सेवन कर सकते हैं।

38 वैश्वानर (अग्निमुख)

मंदाग्नि, ग्रहणी गुल्म और कब्ज में मुख्य है। मात्रा वगैरह इन्तुप्पु काणम के जैसे।

39 सारस्वत चूर्ण

बुद्धि को तेज़ करने तथा मानसिक रोगों को शांत करने के लिए यह मुख्य है। शुद्ध उच्चारण और बातचीत की सफाई के लिए प्रशस्त है। मात्रा– 2 से 5 ग्राम तक। घी या दूध में सेवन कर सकते हैं।

40 हिंगुवचादि चूर्ण

गुल्म, अरुचि, मंदाग्नि आदि रोगों में यह मुख्य औषध माना जाता है। मट्ठे में सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

41 हुतभुगादि चूर्ण

अर्श, मंदाग्नि, कब्ज और पाण्डुरोग में यह प्रधान है। मट्ठे में सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

भस्म वर्ग

1 अग्निभेदी सिन्दूर

रक्ताल्पता, पाण्डु, ग्रहणी इन रोगों में मुख्य है। मात्रा– 60 से 200 मि. ग्राम तक।

2 अभ्रभस्म

प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र में मुख्य है। धातुओं की पुष्टि करेगा। मात्रा– 200 से 500 मि. ग्राम तक।

3 अभ्रभस्म सहस्रपुटी

अभ्र भस्म के बताये रोगों में अभ्र भस्म से अधिक प्रभावशाली है।

4 अर्कलवण भस्म

प्लीहा रोग, अग्निमांद्य इन में प्रशस्त है। मात्रा– 2 से 5 ग्राम तक।

5 आविल तोलादि भस्म

शोफ, महोदर इन में अतीव मुख्य है। इस को पानी में घोल कर जब पानी शुद्ध होता है तब उस में कंजी पकाकर पिला सकते हैं। इस को गरम पानी में सेवन भी कर सकते हैं। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

6 कन्मद्द भस्म

मूत्रकृच्छ, पूयमेह, शुक्लस्राव आदि में यह मुख्य है। दूध में या नन्हे नारियल के पानी में सेवन करना चाहिए। मात्रा– 200 से 500 मि.ग्राम तक।

7 कल्याण क्षार

गुल्म, ग्रहणी और उदावर्त में मुख्य है। मात्रा– 2 से 5 ग्राम तक घी मिलाकर सेवन करना चाहिए।

8 कान्तसिन्दूर

गुल्म, ग्रहणी और रक्ताल्पता में अच्छी दवा है। रक्तगुल्म और शूल के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है। मात्रा– 200 मि. ग्राम से 500 मि. ग्राम तक।

9 क्षारागद

कफगुल्म, उदावर्त, बदहज़मी इन के लिए प्रशस्त है। मात्रा– 2 से 5 ग्राम तक।

10 गन्धकरसायन

त्वग्दोष, व्रण, अर्श और रक्तदुष्टि में मशहूर औषध है। दूध में सेवन करना चाहिए। मात्रा– 250 से 800 मि. ग्राम तक।

11 चतुर्मुख चिन्तामणि

सिद्ध मकरध्वज के जैसे।

12 ताम्र भस्म

दमा, त्वग्दोष, गर इन में मुख्य है। मात्रा– 30 से 120 मि. ग्राम तक।

13 तालक भस्म

कासश्वास आदि कफ के रोगों और उपद्रवों में विशेष उपयोगी है। मात्रा– 30 से 120 मि. ग्राम तक।

14 तुत्थांजन

तिमिर आदि नेत्र रोगों में मुख्य है। सवेरे और शाम को आँखों में लगा दें।

15 नाग भस्म

वस्ति संबन्धी रोगों में और ग्रहणी, अतिसार, गुल्म आदि उदर रोगों में मुख्य है। मात्रा– 30 से 200 मि. ग्राम तक।

16 पंचलवण भस्म

यह मंदाग्नि, ग्रहणी, गुल्म इन में अत्यन्त मुख्य है। घी या मट्ठे में सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 500 मि. ग्राम से 1½ ग्राम तक।

17 पनविरलादि भस्म

शोफ, पांडु और महोदर में मुख्य है। मात्रा आदि आविलतोलादि के जैसे।

18 पलाश क्षार

आर्तव की शुद्धि के लिए यह मुख्य औषध माना जाता है। मात्रा– 2 से 4 ग्राम तक।

19 प्रवाल भस्म

असृग्दर, मूत्रकृच्छ्र, खाँसी और रक्तपित्त में मुख्य है। मात्रा– 400 मि. ग्राम से $1\frac{1}{2}$ ग्राम तक। मक्खन और शहद मिलाकर प्रतिदिन दो दफे या कई दफे करके सेवन कर सकते हैं।

20 मुक्ता भस्म

मूत्रकृच्छ्र, असृग्दर, बलहानि और मन्दबुद्धि में बढ़िया है। सेवन का क्रम प्रवाल भस्म के जैसे। मात्रा– 60 से 200 मि. ग्राम तक।

21 यशद भस्म

मूत्रकृच्छ्र, पूयमेह, ग्रहणी और उदरव्रणों में प्रशस्त है। मात्रा आदि नागभस्म के जैसे।

22 रजत भस्म

बलहानि, दमा, रक्त थूकना, असृग्दर, पूयमेह आदि में विशेष औषध है। मात्रा– 30 से 120 मि. ग्राम तक।

23 रससिन्दूर

फिरंग, दुष्टव्रण, नाळीव्रण और त्वग्दोष में यह अनुभवसिद्ध है। मात्रा– 30 से 120 मि. ग्राम तक।

24 लोहसिन्दूर

रक्ताल्पता, पाण्डु और पित्त में सिद्ध औषध है। शहद या शक्कर मिलाकर सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 200 से 500 मि. ग्राम तक।

25 वंगभस्म

पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र आदि वस्तिरोगों में मुख्य है। पाचनशक्ति भी बढाएगी। मात्रा– 120 से 400 मि. ग्राम तक।

26 शंखभस्म

पाचनशक्ति की हानि, विदाह, खट्टी डकार इन में मुख्य है। शक्कर या शहद मिलाकर सेवन कर सकते हैं। मात्रा– 200 से 500 मि. ग्राम तक।

27 शृंगभस्म

पूयमेह में मुख्य है। दूध में सेवन करना चाहिए। मात्रा– 400 मि. से $1\frac{1}{2}$ ग्राम तक।

28 स्वयमग्निसिन्दूर

पेट में दर्द, मन्दाग्नि और उदर के व्रणों में बढ़िया है। मात्रा— 30 से 150 मि. ग्राम तक।

29 स्वर्णभस्म

त्वग्दोष, त्वचा के वर्णभेद, बलहानि आदि अनगिनत रोगों में यह अद्‌भुत फल देनेवाला मुख्य रसायन है। मात्रा— 30 से 100 मि. ग्राम तक।

30 सिद्धमकरध्वज

बुद्धि को तेज करने और देहकान्ति को बढ़ाने में सहायक है। काम विकार का उद्दीपन करता है। जीर्णज्वर, सन्निपात, त्वग्दोष, धातुक्षय इन में भी अच्छा है। मात्रा— रससिन्दूर के जैसे।

31 सुवर्णवंग

बल बढ़ाता है। प्रमेह को शान्त करता है, मेधा कान्ति और दीपनशक्ति को बढ़ाता भी है। मात्रा— 50 से 200 मि. ग्राम तक।

32 हिंगुल भस्म

व्रणों के लिए अच्छा है। सेवन कर सकते हैं, बाहर मल भी सकते हैं। मात्रा आदि रससिन्दूर के जैसे।

रसक्रियाएँ

इळनीर कुषम्पू

गरमी और पित्तकोप से होनेवाले नेत्ररोगों में मुख्य है। एक एक बूँद ों में डाल दें।

कर्पूरादि कुषम्पू

काच, तिमिर, शुक्ल, अर्म आदि रोगों में बढ़िया है। दोनों आँखों में एक बूँद डाल देना चाहिए।

काचयापनं कुषम्पू

तिमिर रोग और काच के लिए प्रसिद्ध औषध है।

नयनामृतं कुषम्पू

मंददृष्टि, तिमिर, मालक्कण्ण (निशांध्यता) आदि में बढ़िया औषध है।

कुलत्थमधु

कर्णशूल, कर्णपाक, कान बहना आदि उपद्रवों में कानों में डालने के लिए।

क्षारमधु

उपजिह्व (Tonsilitis) के सूजन में मलने के लिए उत्तम है।

टंकणमधु

मुख के अन्दर होनेवाले व्रणों में मलने के लिए उत्तम है।

लेह्य वर्ग

1 अगस्त्य रसायन

क्षय, खांसी, दमा इन के लिए अत्युत्तम है। मात्रा– 10 से 20 ग्राम तक।

2 अभयामृत रसायन

यह बदचलन से या दूसरे कारणों से होनेवाले इन्द्रिय स्खलन को रोक कर स्वास्थ्य स्थापन के लिए उत्तम औषध है। मात्रा— 10 से 15 ग्राम तक।

3 अश्वगन्धादि लेह्य

क्षय, खांसी, उरःक्षत, धातुशक्ति की हानि इन को शान्त करके शरीर की पुष्टि करने के लिए उत्तम औषध है। मात्रा— 10 से 40 ग्राम तक।

4 आम्रसार रसायन

नये पुराने पूयमेंह शुक्लस्राव में अनुभवसिद्ध औषध है। मात्रा— 10 से 15 ग्राम तक। सवेरे तथा शाम को सेवन करके ऊपर दूध पीना चाहिए।

5 कल्याण गुळ

मारी अवस्थाओं में विरेचन के लिए उत्तम है। मात्रा–5 से 15 ग्राम तक।

6 कस्तूर्यादि लेह्य

दमा, खांसी, हिचकी, दम घुटना, छाती में दर्द इन में विशेष प्रभाव करता है। मात्रा— 2 ग्राम से 4 ग्राम तक ले कर कई बार करके सेवन करना चाहिए।

7 कुटजत्वगादि लेह्य

रक्तातिसार और रक्त बहने वाले अर्शो रोग में खास औषध है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक।

8 कूश्माण्ड रसायन

क्षतकास, क्षय, रक्तष्ठीवन (थूकना) इन में मुख्य है। मात्रा—5 से 15 ग्राम तक।

9 गन्धकराज रसायन

यह गन्धक रसायन (21 शुद्धि) में चातुर्जात आदि मुख्य औषधियाँ मिलाकर यथाविधि भावना करके तैयार किया गया है। कोढ़, फिरंग, प्रमेह आदि भयंकर व्याधियों का यह विशेष शमन करता है तथा दीर्घ जीवन, शरीरवल और मन:शक्ति प्रदान करता है। इन्द्रियों का दमन करने की शक्ति भी देता है। पथ्य— नमक बिलकुल वर्ज्य है। फल और दूध पाचनशक्ति के अनुसार खा पी सकते हैं। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक।

10 चिंचादि लेह्य (चेरियतु–छोटा)

पित्तकोप तथा उससे होनेवाले रोगों में मुख्य है। अकेले या मट्ठे में सेवन कर सकते हैं। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक।

11 चिंचादि लेह्य (वलियतु–बडा)

पैत्तिक रोगों में मुख्य है। अकेले या मट्ठे में सेवन कर सकते हैं। 'छोटा' से अधिक प्रभाव दिखाता है। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक।

12 चित्रक लेह्य

अर्श, मन्दाग्नि इन में मुख्य है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक।

13 च्यवनप्राश लेह्य

बलक्षय, अलसाई, उदासी, दमा, हृद्रोग आदि में प्रशस्त है। मात्रा— 10 से 20 ग्राम तक।

14 तांबूल लेह्य

बच्चों की कुक्कुर खांसी के लिए प्रशस्त औषध है। मात्रा— 1 से 3 ग्राम तक। बार बार थोड़ा थोड़ा करके सेवन कर सकते हैं। बच्चों की एक एक साल की उम्र के लिए 400 मि. ग्राम की गिनती में मात्रा बढ़ानी चाहिए।

15 तालीसपत्रादि वटक

वात और कफ के कोप से जो कै होती है उस की तथा ग्रहणी की शांति के लिये उत्तम है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक।

16 तालीसपत्रादि लेह्य

वटक के लिए जो गुण बताये गये हैं उन के अलावा विरेचक भी है। मात्रा– 5 से 15 ग्राम तक।

17 त्रिवृल्लेह्य

यह विरेचन के लिए उत्तम है। ऐसी यही एक दवा है जो विरेचन करता है लेकिन सेवन में कष्ट नहीं होता। मात्रा– 5 से 20 ग्राम तक।

18 दन्तीहरितकी लेह्य

गुल्म, शोफ, महोदर, पाण्डु इनको विरेचन से शुद्ध करके रोगशान्ति करता है। मात्रा– 5 से 15 ग्राम तक।

19 दशमूल रसायन

दमा, हिचकी, छाती में दर्द, क्षय आदि रोगों में मुख्य है। मात्रा– 5 से 20 ग्राम तक।

20 दशमूलहरितकी लेह्य

पाण्डु रोग, शोफ, गुल्म, शूल आदि में मुख्य है। मात्रा–5 से 15 ग्राम तक।

21 द्राक्षादि लेह्य

पाण्डुरोग और कामिला की शिकायत में मुख्य है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

22 नारसिंह रसायन

कमजोरी, पित्ताधिक रोग, कृशता आदि में प्रत्यक्ष फल देता है। शरीर की कान्ति, पुष्टि, ओज और धातुबल बढ़ाता है। मात्रा–5 से 20 ग्राम तक। सेवन करके ऊपर दूध पीना चाहिए।

23 नारायण गुड

यह प्रमेह रोगियों के लिए उत्तम है। शौच ठीक करता है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक।

24 परूपकादि लेह्य

पेट में दर्द और व्रण के लिए उत्तम है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक।

25 पुनर्नवा मण्डूर

रक्ताल्पता, कामिला आदि में विशेष औषध है। शौच भी ठीक करता है मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक।

26 पुळिंकुषम्पू (पुळि लेह्य)

सूतिकाओं के लिए मन्दाग्नि, ग्रहणी, गुल्म और पेट के दर्द में यह खास दवा है। गर्भाशय की शुद्धि के लिए यह मुख्य है। मात्रा— 5 से 10 ग्राम तक।

27 ब्राह्मरसायन

करीब च्यवनप्राश की ही तरह इस का उपयोग कर सकते हैं।

28 मधुस्नुही रसायन (चेरियतु–छोटा)

त्वग्दोष, विसर्प तथा दुष्टव्रणों के लिए यह मुख्य औषध है। पथ्य— मिर्च और इमली बिलकुल वर्ज्य है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक।

29 मधुस्नुही रसायन (वलियतु–वडा)

'छोटे' के बताये रोगों में इस का अधिक प्रभाव होता है। मात्रा भी वही है।

30 महाविल्वादि लेह्य

अजीर्ण, वमन, अतिसार, पेट में दर्द और अरुचि के लिए यह प्रशस्त औषध है। मात्रा— 5 से 15 ग्राम तक।

31 माणिभद्र लेह्य

त्वग्दोष के रोगों में विरेचन के लिए उत्तम औषध है। मात्रा— 5 से 20 ग्राम तक।

32 मृद्धीकादि लेह्य

दमा और खांसी में आशुफल देने वाला है। मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।

33 वसिष्ठ रसायन

इसका प्रभाव, फल व उपयोग का क्रम अगस्त्य रसायन के जैसे।

34 विल्वादि लेह्य

अरुचि, मन्दाग्नि, छर्दी, मुँह में पानी आना, दमा आदि रोगों में उत्तम औषध है। मात्रा– 2 से 10 ग्राम तक।

35 व्याघ्र्यादि लेह्य

खांसी और दमे की शिकायत में मुख्य औषध है। मात्रा– 5 से 15 ग्राम तक।

36 शतावरी गुळ

सब तरह के मूत्रकृच्छ और पूयमेह में विशेष फल देनेवाला है। मात्रा– 5 से 15 ग्राम तक।

37 स्तन्यजनन रसायन

प्रसूता नारियों के स्तन्य को बढ़ाने के लिए, स्तन्य शुद्धि करके बच्चों का स्वास्थ्य और बुद्धि को बढ़ाने के लिए उत्तम है। मात्रा– 5 से 15 ग्राम तक।

38 सुकुमार लेह्य

गुल्म, आन्त्रवायु, शूल और आन्त्रवृद्धि में अत्यन्त उपयुक्त औषध है। मात्रा– 5 से 15 ग्राम तक।

39 सूरणादि लेह्य

अर्शोरोग और अतिसार के लिए यह उत्तम है। मात्रा– 5 से 20 ग्राम तक।

40 हिंगुत्रिगुण लेह्य

अन्त्रवायु, गुल्म, शूल और वृद्धि में विशेष औषध है मात्रा– 5 से 10 ग्राम तक।



बृहच्छारीर

(संस्कृत शारीर ग्रन्थ)

पहला भाग रु. 80/–

दूसरा भाग रु. 15/–

आयुर्वेद पर जो यह शिकायत है कि उसका शारीर विज्ञान अपूर्ण है; वह दूसरे वैद्य पद्धतियों के समान् योग्यता नहीं रखता, इसका वैद्यरत्नम के इस अनुपम बृहत् ग्रन्थ से निराकरण हुआ है। सरल संस्कृत भाषा में लिखे हुए इस ग्रन्थ में नवीन शारीर विज्ञान से मेल कराते हुए, आयुर्वेद के शारीर विज्ञान को विस्तार से वर्णन करके विकसित किया है। सारी बातों का तत्तद् अनुयोज्य चित्रों के साथ सूक्ष्म–सूक्ष्म रूप से प्रतिपादन किया है।

आयुर्वेद के अध्यापकों तथा छात्रों के लिए यह अमोल निधि है।

Printed at Calicut Printing Complex Phone: 50485